पूँजीवादी साम्राज्य और महिलाएँ

सैयद सआदतुल्लाह हुसैनी

अनुवाद

मुहम्मद इलियास हुसैन

विषय-सूची

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयावान अत्यन्त कृपाशील है।'

दो शब्द

साम्राज्यवाद स्वयं में ही एक दमनकारी और शोषण पर आधारित व्यवस्था है। लेकिन जब साम्राज्य पूँजीवादियों के हाथ में चला जाए तो इसका परिणाम तदधिक भयावह हो जाता है। पूँजीवादी साम्राज्य केवल अर्थव्यवस्था पर ही अपना वर्चस्व स्थापित करके शान्त नहीं हो जाता बल्कि उसका शिकार समाज और राजनीति भी होती है और फिर शोषण का एक न समाप्त होनेवाला सिलसिला आरम्भ होता है। उसका शिकार केवल कमज़ोर वर्ग ही नहीं होता बल्कि समूचा वातावरण दूषित होकर रह जाता है। इससे एक ओर सामाजिक भेदभाव उत्पन्न होता है तो दूसरी ओर जलवायु प्रदूषण जैसे संकट उत्पन्न होते हैं। जिसका नतीजा आज हम अपनी आँखों से देख रहे हैं। फिर शिक्षा और रोज़गार इत्यादि के क्षेत्र में सबको समान अवसर न मिल पाने के कारण ग़रीब और अधिक ग़रीब होता चला जाता है तथा पूँजीपति की गाँठ और अधिक मोटी व मज़बूत होती जाती है। उनकी भोग विलासितापूर्ण जीवन शैली के नतीजे में उपभोक्तावाद को बढ़ावा मिलता है। लोगों में उनकी देखा-देखी ज़रूरत से अधिक चीज़ें ख़रीदने की प्रवृत्ति जन्म लेती है। इससे पूँजीवादियों को ब्याज का कारोबार चमकाने का ख़ूब अवसर मिलता है और सामाजिक समस्याएँ विकराल रूप धारण कर लेती हैं।

इस पूरे परिदृश्य में मीडिया बहुत महत्त्वपूर्ण रोल अदा करता है। चूँकि मीडिया पूँजीवाद की कठपुतली होता है इसलिए वह उन्हीं बातों को प्रचारित और प्रसारित करता है जिनमें साम्राज्यवाद का हित होता है।

उपरोक्त परिस्थितियों को सामने रखते हुए जमाअते-इस्लामी हिन्द ने 2008 ई० में एक साम्राज्यवाद विरोधी अभियान चलाया था। यह अभियान

उन लाखों और करोड़ों लोगों के दिल की आवाज़ थी जो इस पूँजीवादी साम्राज्य के शोषण का शिकार हैं।

इस अभियान में जहाँ एक ओर पूँजीवादी साम्राज्य के शोषण और अत्याचार के नतीजे में होनेवाली तबाहकारियों से लोगों को परिचित कराया गया था वहीं इस्लाम को वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में पेश भी किया गया था।

इस अभियान के अवसर पर पुस्तिकाओं की एक शृंखला (Series) प्रकाशित की गई थी जिनमें पूँजीवादी साम्राज्य का विभिन्न पहलुओं से अध्ययन कर उससे होनेवाली तबाहियों को सहज रूप में प्रस्तुत किया गया था और इस्लाम को एक वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया था। इन पुस्तिकाओं की महत्ता और लोकप्रियता को देखते हुए इनको पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। चूँकि ये पुस्तिकाएँ 2008 ई॰ में लिखी गई थीं इसलिए इनमें तत्कालिक घटनाओं का उल्लेख भी कहीं-कहीं हुआ है। पाठकों से अनुरोध है कि वे इस बात का ध्यान रखें।

हमें आशा है कि ये पुस्तिकाएँ पाठकों के लिए लाभकारी सिद्ध होंगी।

हमारा पूरा प्रयास रहा है कि प्रूफ़ आदि की दृष्टि से इन पुस्तिकाओं में कोई त्रुटि न रहे। लेकिन यदि कहीं कोई त्रुटि पाई जाए तो पाठकगण हमें अवश्य सूचित करें हम उनके आभारी होंगे।

नसीम ग़ाज़ी फ़लाही
सेक्रेट्री
इस्लामी साहित्य ट्रस्ट (दिल्ली)

पूँजीवादी साम्राज्य और महिलाएँ

पूँजीवादी साम्राज्य के अत्याचार और अन्याय का शिकार दुनिया के तमाम कमज़ोर वर्ग ही होते हैं। साम्राज्यवाद की बुनियाद ही यह है कि वह अपने फ़ायदे के लिए कमज़ोर वर्गों का शोषण करता है। पूँजीवादी साम्राज्य यह शोषण आर्थिक लाभ और धन-दौलत के लिए करता है। ग़रीब देश, सारी दुनिया की ग़रीब जनता, आदिवासी, पिछड़े वर्ग और देहातियों इत्यादि के साथ पूँजीवादी शोषण का शिकार एक अहम कमज़ोर वर्ग दुनिया भर की औरतों का वर्ग है। आर्थिक लाभ और दौलत की हवस में पूँजीवादी साम्राज्य, औरतों को तरह-तरह से ज़ुल्म का शिकार बनाता है। उनपर दुगुने और तिगुने कामों का बोझ डालता है। उनकी शारीरिक और भावनात्मक ज़रूरतों का लिहाज़ किए बिना उनसे मशीन की तरह काम लेता है। उनके शरीर और सौन्दर्य को बिक्री योग्य बना देता है और मंडियों में उनकी बोली लगाता है। उनपर यौन सम्बन्धी-अत्याचार करता है। अपनी चीज़ों (उत्पादों) को बेचने के लिए उनका भावनात्मक, आर्थिक और शारीरिक शोषण करता है।

औरत जितनी पीड़ित और शोषित प्राचीन परम्परागत समाजों में थी, उससे कहीं ज़्यादा उत्पीड़न और शोषण का शिकार नए पूँजीवादी समाज में है। वहाँ भी उसके लिए ज़िन्दगी की घड़ियाँ तंग थीं और यहाँ भी तंग हैं। वहाँ भी वह प्राचीन सामाजिक रीति-रिवाजों के आगे मजबूर थी और ख़ामोशी से ज़ुल्म की चक्की में पीसी जाती थी और यहाँ भी आधुनिक सभ्यता के सांस्कृतिक मापदंडों के आगे वह मजबूर है और ज़ुल्म की चक्की में पीसी जाती है।

समाज के दूसरे पीड़ित और शोषित वर्ग देहाती लोग, ग़रीब जनता, आदिवासी वग़ैरा की मदद के लिए सोशलिस्ट और अन्य संगठन काम कर रहे हैं, लेकिन औरतों का सच्चा हितैषी कोई नहीं है। औरतों के शोषण में पूँजीवादी और समाजवादी दोनों बराबर हैं और जो महिला-संगठन उनकी हमदर्दी की दावेदार हैं वे सबसे ज़्यादा इस ज़ुल्म के लिए राहें हमवार करती हैं। सच्चाई यह है कि औरत को शान्ति और सुकून सिर्फ़ इस्लाम की शीतल छाया में मिलता था और भविष्य में भी सिर्फ़ इस्लाम ही उनको मुसीबतों और परेशानियों से नजात दिला सकता है।

करियरिज़्म, काम का दबाव और शोषण

नई पूँजीवादी व्यवस्था को अपनी सेवा के लिए सस्ते मज़दूरों और कर्मचारियों की एक बड़ी फ़ौज की ज़रूरत थी। उसने मीडिया के ज़रीए 'करियर वुमन' (Career Woman) अर्थात् कामकाजी महिलाओं का विचार पेश किया। परिवार और पारिवारिक ज़िन्दगी की अहमियत घटाई। शादी के विचार को भी निरर्थक क़रार दिया और बिना शादी के 'सहवास' (casual sex) और बिना शादी के जिंसी ज़िन्दगी अथवा सह-जीवन (Live in relationship) जैसे रिवाजों को बढ़ावा दिया। मक़सद यह था कि महिलाएँ, परिवार और बच्चों के झमेलों में पड़े बिना उसकी ख़िदमत के लिए हरदम उपलब्ध रहें।

आई. टी. कम्पनियों, कॉल सेंटरों, बी. पी. ओ. इंडस्ट्री वग़ैरा में यह तयशुदा पॉलीसी मौजूद है कि निचली सतहों की नौकरियों के लिए औरतों को प्राथमिकता दी जाए। एच. आर. इसकी वजह यह बताते हैं कि औरतें मर्दों के मुक़ाबले में ज़्यादा देर तक जमकर और बैठकर काम कर सकती हैं। वे ज़्यादा आज्ञाकारी होती हैं। वे कम वेतनों पर तैयार हो जाती हैं और छुट्टियाँ कम लेती हैं। यही वजह है कि आई टी ई एस (ITES) कम्पनियों में जूनियर सतहों पर औरतें कुल कर्मचारियों के आधे से ज़्यादा हैं, जबकि कॉल सेंटरों में उनकी संख्या 35 प्रतिशत से ज़्यादा है।[1] भूमंडलीकरण (Globalization) के दौर में ये कम्पनियाँ औरतों की किसी ज़रूरत का लिहाज़ नहीं करतीं। पहले से ही कॉल सेंटरों में औरतें नाइट शिफ़्टों में रात-रात भर काम कर रही थीं। सुप्रीम कोर्ट के 2007 ई. के फ़ैसले और फ़ैक्टरीज़ एक्ट में किए गए संशोधन[2] के बाद रही सही रुकावट भी ख़त्म हो गई। यहाँ न उनकी ख़ास ज़रूरतों का ख़याल किया जाता है न गर्भ वग़ैरा के दौरान छुट्टियों से सम्बन्धित नियमों की पाबन्दी की जाती है और न उनके लिए प्राइवेसी वग़ैरा का एहतिमाम होता है। रात-रात भर काम करने से औरतों में सेहत के तरह-तरह के मसले पैदा होते हैं। उनकी माहवारियों का निज़ाम (मासिक धर्म-चक्र) बिगड़ जाता है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइज़ेशन की रिपोर्ट के मुताबिक़ रात की शिफ़्टों में काम करनेवाली औरतों में छाती के

---

1. The Hindu, March 04, 2006
2. Factories (Amendment) Bill 2005

केंसर की आशंका बढ़ जाती है।[1]

मर्दों के मुक़ाबले में नाइट शिफ़्टों में काम करनेवाली औरतों में अनिद्रा, यौन-क्षमताओं में कमी, थकान, दिल की बीमारियों, रासायनिक असन्तुलन सम्बन्धी रोग (Metabolic Disorders) वग़ैरा की आशंकाएँ ज्यादा होती हैं।[2] रात-रात भर वे मर्दों के बीच बैठी रहती हैं और तरह-तरह के उत्पीड़नों का शिकार होती हैं। उन्हें एक ही समय में अपने काम में उच्च स्तर का भी सुबूत देना है और मर्द अधिकारियों के मन की सन्तुष्टि का भी सामान करना है। टाइम्स ऑफ़ इंडिया ने इस पर टिप्पणी करते हुए सही लिखा है कि आजकल की कम्पनियों में एक औरत कर्मचारी से आशा की जाती है कि वह—

"Look like a woman, behave like a lady, think like a man and work like a dog."[3]

(एक ही समय में नारी सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति बनी रहे, भद्र महिला जैसा आचरण करे और मर्द की तरह सोचे और कुत्ते की तरह काम करे।)

सितम पर सितम यह है कि इन पीड़ित एवं शोषित महिलाओं को अपने मसलों के हल और ज़ुल्म के ख़िलाफ़ प्रदर्शन के मौक़े हासिल नहीं हैं। मल्टी नेशनल कम्पनियाँ यद्यपि भारत के अन्दर काम करती हैं, लेकिन देश के क़ानून के अनुसार कर्मचारियों को यूनियन बनाने और सामूहिक रूप से अपने मसलों को हल कराने का मौक़ा नहीं देतीं। फ़ैक्टरीज़ एक्ट और शॉपूस एंड इस्टेबलिशमेंट एक्ट की बहुत-सी धाराओं से उन्हें अलग रखा गया है।

जो मल्टी नेशनल कम्पनियाँ दिन में काम करती हैं वे भी रात में ग्यारह-ग्यारह, बारह-बारह बजे तक उन्हें काम करने पर मजबूर करती हैं। उन्हें ऐसे लक्ष्य (Targets) दिए जाते हैं, जिनको आठ घंटों की क़ानूनी अवधि में पूरा करना मुमकिन नहीं होता। प्रोजेक्ट को पूरा करने के दिनों में तो कभी-कभी सारी-सारी रात उन्हें ऑफ़िस में ही रहना होता है। जिन कम्पनियों में ये बाक़ायदा नाइट शिफ़्ट होती है, वहाँ कम से कम औरतों की सुरक्षा की व्यवस्था होती है। लेकिन दिन में काम करनेवाली कम्पनियों में ये सहूलतें भी नहीं होतीं। कभी एक ही लड़की को कई मर्दों के साथ ऑफ़िस

---

1. Journal of the National Cancer Institute Vol 93, No. 20, 1557-1562 17-10-2001
2. Sharan A Chungetal : Journal of Women's Health, july 2009, 18 (7), 965-977
3. Times of India 2/8/1993

में रात-रात भर काम करना पड़ता है। सरकार उन कम्पनियों पर देश के क़ानून (Labour Laws) लागू नहीं करती। उन कम्पनियों में औरतों को अकसर अपने उच्च अधिकारियों और सहकर्मियों की ओर से जिंसी ज़्यादतियों (यौन-उत्पीड़नों) का शिकार होना पड़ता है। पिछले कुछ सालों के अन्दर बी. पी. ओ. केन्द्रों और कॉल सेंटरों में कई काम करनेवाली औरतों के साथ बलात्कार और हत्या की घटनाओं ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया था। सुबह की पहली घड़ियों में उसी के ऑफ़िस में काम करनेवाले कर्मचारी के ज़रीए तानिया बनर्जी का बलात्कार और उसकी हत्या,[1] एच. पी. कम्पनी में काम करनेवाली प्रतिभा मूर्ति की उसकी कार के ड्राइवर के द्वारा हत्या[2] और दिल्ली में एक के बाद दूसरी इस तरह की कई घटनाएँ ज़ाहिर करती हैं कि वास्तव में हालात कितने ख़राब हैं।

बलात्कार और हत्या के इन्तिहाई क़दमों की वजह से कुछ घटनाएँ प्रेस में आ जाती हैं, वरना ख़ामोश यौन उत्पीड़न और शोषण अकसर जगहों पर एक नियमित कर्म है।

कॉल सेंटरों और बी. पी. ओ. केन्द्रों में कॉलेजों से निकलने वाले बिलकुल नौजवान लड़कों और लड़कियों को नौकरियाँ दी जाती हैं। उन नौजवान लड़कों को रात-रात भर सजी-सजाई और अकसर अर्द्धनग्न लड़कियों के साथ बिठाया जाता है। उन लड़कियों को कॉल सेंटरों में ख़ूबसूरत आवाज़ और दिल को लुभानेवाले लहजे और अन्दाज़ की ख़ास तौर पर ट्रेनिंग दी जाती है। कुछ कॉल सेंटर अमेरिकी ग्राहकों के मनोरंजन के लिए उन लड़कियों को अश्लील बातचीत करने की भी ट्रेनिंग देते हैं।[3] फिर रात भर अमेरिका के कोने-कोने से आनेवाली कॉलों का जवाब देने के लिए उन्हें बहुत ही तनाव भरे काम पर लगे रहना पड़ता है। इस माहौल में जिंसी जज़्बात (काम भावनाओं) का बेक़ाबू हो जाना मामूली बात है। इसलिए फ़रवरी 2006 में किए गए एक अध्ययन के अनुसार नोएडा के एक कॉल सेंटर में 11 प्रतिशत महिला कर्मचारियों ने कहा था कि पाँच से ज़्यादा मर्दों ने उनसे शारीरिक सम्बन्ध क़ायम किया है।[4]

जंगली पार्टियों (Wild Parties) का उन कर्मचारियों में बहुत

---

1. Times of India, Banglore, 27th July 2006
2. Times of India, December 19, 2005
3. Times of India, 30-08-2005
4. www.theviewspaper.net/hiv_aids_and_indian_youth./

ज्यादा चलन पाया गया। उन पार्टियों में एक ही रात में लड़के और लड़कियाँ कई-कई साथियों के साथ सामूहिक रूप में अनेक तरह से यौन-क्रियाओं में लिप्त होते हैं। अतः मुम्बई में कॉल सेंटरों के कर्मचारियों में किए गए एक सर्वे के अनुसार 89 प्रतिशत कर्मचारी इस तरह की पार्टियों को नियमित रूप से अटेंड करते रहते हैं।[1] बड़ी कम्पनियों में सफ़ाई का काम करनेवाले कर्मचारी बताते हैं कि उन्हें बार-बार बाथ रूम की सफ़ाई के लिए बुलाया जाता है, क्योंकि बाथरूम कंडोमों की वजह से चोक हो जाते हैं।[2]

वालस्ट्रीट जरनल ने सावधान किया है कि कॉल सेंटर्स और बी. पी. ओ. केन्द्र एड्स और दूसरी घातक बीमारियों के फैलने का ज़रीआ बन सकते हैं। ये सब बेहूदगियाँ इस कल्चर का अनिवार्य अंग हैं, जो साम्राज्यवाद अपना स्वार्थ साधने के लिए हमारे देश में फैला रहा है।

इन सारी मुसीबतों के बाद औरतें जो कमाई करती हैं उसपर —अकसर जगहों पर, ख़ासकर हमारे देश में— उनका कोई हक़ नहीं होता, डॉक्टर प्रमिला कपूर के शोध के अनुसार मध्य और उच्च मध्य वर्गों में काम करनेवाली औरतों का अपनी आमदनी पर कोई इख़्तियार नहीं होता। उन्हें अपनी सारी कमाई अपने पति या ससुराली रिश्तेदारों के सुपुर्द करनी पड़ती है। उन्हें ऑफ़िस के मसले भी झेलने होते हैं और घर के मसले भी। फिर अकसर उनके चरित्र से सम्बन्धित शक और भ्रम के काले बादल उनपर मंडराते रहते हैं।

प्रमिला कपूर ने एक लेडी डॉक्टर का क़िस्सा लिखा है, जिसे उसका पति रोज़ के ख़र्चों के लिए उसकी आमदनी में से सिर्फ़ दो रुपये वापस करता था।[3]

काम का यह बोझ और यह चौमुखी लड़ाई शहरी औरतों को मानसिक रोगों का शिकार बना रही है। वर्ष 2009 ई. में महिला-दिवस के अवसर पर असोचम 'Associated Chambers of Commerce and Industry of India' (जो हमारे देश में व्यापारिक और औद्योगिक संगठनों में से एक बड़ा संगठन है) ने एक ख़ास रिपोर्ट प्रकाशित की थी। इस रिपोर्ट के अनुसार शहरों में कॉरपोरेट कम्पनियों में काम करनेवाली औरतों की दो

---

1. The Telegraph, Calcutta, May 14, 2006
2. Bangalore Mirror, 27th January 2009
3. Asquotedin Shrin Kudchedkaret.al. 'Violence Against Women, Women Against Violence', p. 28-48, Delhi Pencraft (1998) 'social and personal requirements causestheir healthcare to get ignored.....'

तिहाई से अधिक संख्या (68%) जीवन-शैली से सम्बन्धित बीमारियों (Lifestyle related diseases) की शिकार हैं। इस अध्ययन के अनुसार जिन कम्पनियों में काम के लिए मानसिक तनाव, काम करने की लम्बी अवधि, लक्ष्य और समय-सीमा (Target and Deadlines) इत्यादि मौजूद हैं, वहाँ 75% से ज्यादा औरतें डिप्रेशन का शिकार पाई गईं। रिपोर्ट में कहा गया था कि मीडिया और के. पी. ओ. (KPO) वग़ैरा में काम करनेवाली औरतों को बीमारियों में आसानी से छुट्टियाँ नहीं मिलतीं। काम का दबाव और लक्ष्यों की प्राप्ति की कोशिश में 53% औरतें दोपहर का खाना नहीं खा पातीं।

इन महिला रोगियों की 77% संख्या डॉक्टर के पास भी नहीं जा पाती। असोचम की रिपोर्ट ने स्पष्ट शब्दों में नोट किया है—

Corporate female employees' hectic schedule of balancing workplace and home alongwith balancing between

'कॉरपोरेट की महिला कर्मचारियों में घर और काम की अपेक्षाओं में संतुलन की कोशिश' इसके नतीजे में बहुत व्यस्त समयों और निजी और सामाजिक ज़रूरतों में संतुलन के प्रयास उन्हें अपनी सेहत को नज़रअन्दाज़ करने पर मजबूर करते हैं।[1]

मनोचिकित्सक शीला दत्ता रॉय की एक स्टडी के मुताबिक़ शहरी औरतों में अनिद्रा की बीमारी तेज़ी से बढ़ रही है। आई. टी, कस्टमर केयर, एच. आर वग़ैरह जैसे तनाव भरे पेशों से जुड़ने में बढ़ोत्तरी के कारण औरतों में मर्दों के मुक़ाबले अनिद्रा की बीमारी डेढ़ गुना ज्यादा है। उनके अनुसार कोलकाता में काम करनेवाली औरतों में पिछले दस सालों में, इस रोग में पाँच गुना वृद्धि हो गई है।[2]

'टाइम्स ऑफ़ इंडिया' ने उन औरतों की अंत्यन्त दयनीय स्थिति का चित्रण किया है—

"काम के लम्बे और थका देनेवाले दिन के बाद विस्तर में जाती हैं। घंटों छत को घूरती रहती हैं। घड़ी की टिक-टिक और एयरकंडीशंस की धीमी आवाज़ भी बहुत ही तकलीफ़देह हो जाती है। आधी रात के बाद मजबूर होकर उठती हैं और नींद की गोलियाँ खाती हैं। उन गोलियों के असर से नींद

1. Nusrat Ahmad study on 'Preventive Health Care and Corporate Female Workforce' ASSOCHAM Research Bureau, New Delhi, 2009
2. Ajanta Chakraborty, Long Days, Longer...... 'Times of India, 8th September 2009

आने का एहसास शुरू ही होता है कि अलार्म बजने लगता है। फिर तनाव से भरा थका देनेवाला दिन और उसके बाद फिर एक अनिद्रा भरी रात, सिलसिला चलता रहता है।"[1]

मानसिक रोगों के अलावा यह सूरते-हाल उन औरतों को नशीली दवाओं (Narcotics) में पनाह लेने पर मजबूर कर रही है। संयुक्त राष्ट्र के एक सर्वे के अनुसार भारत के शहरी इलाक़ों में औरतों में नशीली दवाओं (ड्रग्स) का इस्तेमाल बढ़ रहा है। 20 से 30 साल की उम्र में ये औरतें इन नशीली दवाओं की आदी बन जाती हैं और अल्कोहल के अलावा हीरोइन, प्रॉपोक्सीफ़ीन (Propoxyphene) और ट्रैंक्विलाइज़र्स (Tranquilizers) जैसे ख़तरनाक मादक पदार्थों की भी आदी हो जाती हैं। इस रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि औरतों में नई दिल्ली में हीरोइन का इस्तेमाल सबसे ज़्यादा है और चेन्नई जैसे रूढ़िवादी शहरों में भी औरतें इन ड्रग्स की ओर आकर्षित हो रही हैं। रिपोर्ट के अनुसार यहाँ औरतों में ड्रग्स का इस्तेमाल ज़्यादातर ऊँचे, आर्थिक और सामाजिक गरोहों में है। उपर्युक्त नशीले पदार्थों के अलावा डाइज़ापाम और अल्परोज़ोलाम (Diazapam and Alprozolam) जैसी दवाओं का भी उच्च शिक्षा-प्राप्त और आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से उच्च वर्गीय महिलाएँ नशे के लिए इस्तेमाल करती हुई पाई गईं।[2]

महिलाओं को मार्केटिंग का साधन और नारी-देह को एक वस्तु बना देना (Commodification of female body)

ईश्वर ने औरत को सतीत्व और स्वच्छता प्रदान की थी, पूँजीवादी साम्राज्य ने उसकी देह को अपना व्यापार चमकाने का साधन और एक बिक्री-योग्य वस्तु बना दिया है। इस बेहूदगी के खेल में साम्राज्यवाद का सबसे बड़ा मददगार उसका वफ़ादार मीडिया है। समाचारपत्र, पत्रिकाएँ, टी वी, फ़िल्म, इंटरनेट हर जगह औरत एक ही रूप में नज़र आती है। एक सुन्दर और मनमोहक खिलौने के रूप में। जिस तरह खिलौना दिल बहलाने की 'वस्तु' है, उसी तरह औरत का शरीर भी दिल बहलाने की 'वस्तु' है। उसकी देह को ज़्यादा से ज़्यादा नंगा रखा जाता है। ख़ूब सजाया-सँवारा जाता है। हर तरह की चीज़ों के विज्ञापन और बिक्री के लिए उसे इस्तेमाल

---

1. वही
2. UNODC, 2004, 'National Survey on Extent, Pattern and Trends of Drugs Abuse in India', United Nations Office on Drugs and Crime, New Delhi.

किया जाता है। एक ख़ूबसूरत रिसेपशनिस्ट फ्रंट ऑफ़िस के मनमोहक इंटीरियर का अनिवार्य अंग है। पर्सनल सेक्रेट्रियों से चुम्बन कॉरपोरेट पार्टियों के शिष्टाचार में शामिल है। औरत की तस्वीर के बिना कोई विज्ञापन पूरा ही नहीं होता है।

अगर औरत अमेरिका की सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट भी बन जाए तो भी उसका शरीर, ड्रेसिंग और फ़ैशन ध्यान देने योग्य है। हिलेरी क्लिंटन और अमेरिकी राष्ट्रपति की पत्नी मिशल ओबामा के लिबास, सौन्दर्य और स्टाइल इत्यादि जिस तरह दुनिया भर के अख़बारों में बहस का विषय रहे, उससे मालूम होता है कि औरत चाहे कुछ भी बन जाए इस उपभोक्तावादी संसार में एक ख़ूबसूरत खिलौना ही है।

पूरी ढिठाई से महिलाओं को उपाधियाँ भी काम-वासना को भड़कानेवाली की ही दी जाती हैं। आवारा नौजवानों की महिलाओं पर फ़ब्तियाँ कसने की आदत को सभ्य समझी जानेवाली दुनिया ने भी अपना लिया है। सेक्सी (sexy), बिमबॉस (Bimbos, मूर्ख सुन्दरी), हॉस (Hos, एक तरह की गाली) जैसे शब्द नई पढ़ी-लिखी लड़कियों के लिए, अब हमारे देश में अख़बारों में भी धड़ल्ले से इस्तेमाल किए जाने लगे हैं। 1999 में औरतों की फुटबॉल चैम्पियन अमेरिकी टीम की तस्वीर के साथ अमेरिकी समाचारपत्रों ने लेबल लगाया बूटर्स विद हूटर्स (Booters with Hooters)। एक छह साल की बच्ची के टी शर्ट पर लिखा था 'लिट्ल हॉटी' (Little Hottie)।

औरतों के शरीर को वस्तु के रूप में इस्तेमाल करने का घृणित कर्म पोर्नोग्राफ़ी (अश्लील साहित्य, नग्न चित्रों, वीडियो, फ़िल्म इत्यादि) के व्यापार में बहुत उभरकर सामने आता है। पोर्नोग्राफ़ी आर्थिक साम्राज्यवाद के लिए बहुत लाभ का सौदा है। सिर्फ़ अमेरिका, जापान और साउथ कोरिया मिलकर 60 मिलियन डॉलर से ज़्यादा लाभ इस धंधे से कमाते हैं।[1]

पोर्नोग्राफ़ी पर प्रति सेकंड 3 लाख डॉलर ख़र्च किए जाते हैं और लगभग 42 लाख वेबसाइट्स और उनके 42 करोड़ पन्ने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए लगाए गए हैं।[2]

अमेरिकी पोर्नोग्राफ़ी पर प्रति वर्ष 4 मिलियन डॉलर ख़र्च करते हैं।

---

1. www.internet-filter-review.toptenreviews.com/internet-pornography-statistics.htm##time
2. www.internet-filter-review.toptenreviews.com/internet-pornography-statistics.htm##time

अत्यन्त अश्लील उपन्यासों की अमेरिका में बिक्री 11 हज़ार से अधिक है।[1]

पोर्नोग्राफ़ी के इस व्यापार की आसानी के लिए योजनाबद्ध तरीक़े से नग्नता और अश्लीलता से सम्बद्ध नैतिक अवधारणाओं को बदला गया। नग्नता को एक 'फ़ितरी कैफ़ियत' अथवा नैसर्गिक अवस्था (Natural State) क़रार दिया गया और पूरी तरह नंगे रहनेवाले लोगों के परिवार, क्लब, बाज़ार, एयरलाइंस, होटल, मनोरंजन-स्थल वग़ैरा-वग़ैरा बनाए गए। उन्हें 'प्रकृतिवादी' (Naturist) की सुसभ्य संज्ञा दी गई।[2] कई देशों में क़ानूनों में परिवर्तन किए गए। इस तरह पूरी बेहयाई और निर्लज्जता से पूँजीवादी साम्राज्य औरत के देह को भी अपने लाभ के लिए इस्तेमाल कर रहा है।

कुछ लेखकों ने इस व्यापार को औचित्य प्रदान करने के लिए पोर्नोग्राफ़ी और इरोटिका (Erotica) में भेद दिखाने की कोशिश की है। उनके अनुसार किसी लड़की का नग्न चित्र बेढब और बेढंगे तरीक़े से लिया जाए तो यह पोर्नोग्राफ़ी है, लेकिन एक कुशल चित्रकार अपनी कला का कुशल और कलात्मक प्रयोग करते हुए कलात्मक रूप से नग्न चित्र खींचे तो यह 'इरोटिका' है और आर्ट का नमूना तथा सृजनात्मक एवं कलात्मक योग्यता का प्रदर्शन है, इसलिए शिष्ट और मुहज़्ज़ब (सभ्य) है।[3]

इस तरह कलात्मक रूप से लिखित अश्लील कहानियाँ और उपन्यास (Erotic Literature), इसी तरह 'इरोटिक वीडियोग्राफ़ी', 'इरोटिक फ़ोटोग्राफ़ी' आदि, कला के उत्कृष्ट नमूने हैं और इनका सम्मान न करनेवाला और कला के मूल्य को न पहचानने वाला, मूर्ख, गँवार, उज्जड, असभ्य और जंगली है। अतः इस समय कई बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ इस 'सुसभ्य कलात्मक रचना' (Artistic Art) के सृजन के द्वारा मानवता और संस्कृति की 'निस्स्वार्थ सेवा' करने में लगे हुए हैं। नग्न चित्रकला (Nude Photography) एक स्थाई कला की हैसियत हासिल कर चुकी है, जिसके बाक़ायदा पाठ्यक्रम मौजूद हैं। ख़ास तौर पर इस बात की ट्रेनिंग दी जाती है कि नंगी देहों के एक-एक अंग को स्पष्ट रूप से उभारते हुए किस तरह तस्वीरें ली जाएँ।[4]

1. Office of the Attorney General, 2006.
2. 'No shoes, No shirts, No worries' New York Times 27-4-08
3. Eric Jang, as quoted in Bhai Chand Patel, Book Review 'tickle them Pink' Outlook, Oct. 5, 2009, p. 90, New Delhi.
4. Donna Conrad, A Conversatian with Ruth Bernhard Photovision Vol. 1 No.3

'प्लेय बॉय' (Playboy) जैसी कई पत्रिकाएँ इन तस्वीरों के बल पर ही क़ायम हैं। इंटरनेट पर तो यह बहुत बड़ा कारोबार है।

अब तो आज़ादी के कट्टर समर्थक भी इस बात को मानने लगे हैं कि पोर्नोग्राफ़ी बलात्कार की घटनाओं को जन्म देती है। रोबिन मॉर्गन (Robin Morgan) का कथन इस सम्बन्ध में बहुत मशहूर हुआ[1]—

"Pornography is the theory and rape is practice." अर्थात् पोर्नोग्राफ़ी सिद्धान्त है और बलात्कार उसका प्रायोगिक रूप।

बलात्कार की घटनाओं पर शोध करनेवाली मशहूर मनोवैज्ञानिक मैककिनन का कहना है कि पोर्नोग्राफ़ी मर्दों में से औरतों पर ज़्यादतियों के सम्बन्ध में संवेदनशीलता को ख़त्म कर देती है। बलात्कार के अकसर अपराधियों की केस स्टडीज़ से मालूम होता है कि पोर्नोग्राफ़ी की पैदा की हुई संवेदनहीनता की वजह से वे यह समझते रहे कि दुनिया की हर औरत बलात्कार की इच्छुक रहती है। वह अगर इनकार भी करती है तो ये केवल 'सुन्दरी के प्रेमपरक हाव-भाव' हैं। इनकार औरत की अदा है और हठ तथा ज़ोर-ज़बरदस्ती मर्दों की अदा।

पोर्नोग्राफ़ी यह बात भी मन में बिठाती है कि यौन-सम्बन्ध के दौरान औरतों के विविध अंगों की पीड़ाजनक छेड़-छाड़ यौन-क्रिया का अंग और उनके लिए कामोत्तेजना द्वारा आनन्द प्राप्ति का साधन है।[2]

यह मानवता के अपमान की हद है कि इस समय पोर्नोग्राफ़ी के साथ-साथ इंटरनेट, वास्तविक, जीती-जागती औरतों की ख़रीद-बिक्री का एक बड़ा बाज़ार बन गया है।

कमर्शियल सेक्स टूर और मेल ऑर्डर ब्राइड्स (Mail Order Brides) इंटरनेट के जाने-माने कारोबार हैं। इस विषय पर शोध (Research) करनेवाले लिखते हैं कि उत्पादों (products) की तरह औरतों के भी कैटलॉग (Catalogue) हैं। नामों के साथ उनकी तस्वीरें, रंग-रूप का विवरण, लम्बाई, वज़न, शरीर के एक-एक अंग की नाप, यहाँ तक कि यौनांग की सख़्ती और नरमी, शरीर के विभिन्न हिस्सों पर मौजूद दाग़-धब्बों का उल्लेख, खुश करने की सलाहियत आदि विवरणों पर आधारित यह

---

1. Theory and Practice : Pornography and Rape in 'Going to far'. The Personal Chronicle of a Feminist, p.126 Feminist......p.126

2. 'Are Woman Human?' Interview with Catherine MacKinnon, Guardian London, 12-04-2006

केटलॉग 'ख़रीदारों' के लिए वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। जिस तरह वस्तुओं और उत्पादों के ख़रीदार इस्तेमाल करने के बाद इंटरनेट पर अपने अनुभव और अपनी समीक्षा (Review) लिखते हैं, उन बदक़िस्मत औरतों के ख़रीदार भी उन्हें इस्तेमाल करने के बाद तस्वीरों और वीडियो के साथ अपने अनुभव अत्यन्त सूक्ष्म विवरणों के साथ लिखते हैं, ताकि अगले ख़रीदार के 'अनुभवों' से लाभ उठा सकें।[1]

वैश्यावृत्ति (Prostitution)

तवाइफ़ के पेशे (वैश्यावृत्ति) का चलन हमेशा से रहा है। लेकिन मानव-इतिहास हमेशा इस कारोबार पर लज्जित रहा है। इसे समाज में संबकी स्वीकृति कभी भी प्राप्त नहीं रही है। लेकिन इस प्रगतिशील दौर की विशेषता यह है कि यहाँ यह बिज़नेस कोई ढका-छिपा बिज़नेस नहीं है। ये बाक़ायदा लाइसेंस प्राप्त कम्पनियाँ हैं, जो अपने-अपने देशों को टेक्स देती हैं। स्टॉक मार्किट में रजिस्टर्ड हैं। अपने शेयर्स बेचती हैं और हर तिमाही में अपने लाभ का लेखा-जोखा प्रकाशित करती हैं।[2]

अपने-अपने देशों में उनके कारोबार बाक़ायदा क़ानूनी कारोबार हैं। उन्हें वहाँ के समाज में पूरी प्रतिष्ठा और लोकप्रियता हासिल है। जो देश इस कारोबार की अनुमति नहीं देते, साम्राज्यवाद उन्हें 'उज्जड', 'असभ्य' 'पिछड़ा', और 'मध्ययुगीन' होने की 'गाली' देता है। क्या औरतों के अपमान और शोषण के इससे निकृष्ट रूप से मानव-इतिहास परिचित है?

दुनिया भर के अख़बारों में पिछले कुछ सालों से कनाडा के एक न्यूज़ चैनल की बड़ी चर्चा है, जिसमें न्यूज़ रीडर और रिपोर्टर अर्द्धनग्न अवस्था में ख़बरें पढ़ती हैं।[3] व्यापार-समीक्षा-पत्रिकाओं में इसे एक सफल व्यापार की केस-स्टडी के रूप में पेश किया जा रहा है, क्योंकि इस कम्पनी ने बहुत तेज़ी से प्रगति की है।[4]

यह है सफल व्यापार की पूँजीवादी अवधारणा! परदे का रिवाज ऐसे 'सफल कारोबार' की जड़ काट देता है। इसलिए साम्राज्यवाद का परदे से जन्म-जन्म का वैर है। वह अपनी सारी शक्तियों को जमा करके सारा ज़ोर

---

1. action.web.ca/home/catw/readingroom.shtml?x+=16276, by Donna M. Hugles
2. Seth Lubove %: A PatentonPom, Forbes, 04.02.2003.
3. Andry Patrizio "All the News that's fit to strip", WIRED August 2001.
4. Reuters May, 05-2009.

दुनिया को यह समझाने के लिए लगा रहा है कि परदा औरत की ग़ुलामी है और यह इतना बड़ा फ़ितना और बिगाड़ है कि इसे मिटाने के लिए नागरिक अधिकारों आदि की क़ुरबानी भी कोई बुरा सौदा नहीं है और औरतों की आज़ादी यह है कि उन्हें सिर से पैर तक नंगी करके बेचा जाए!

पिछले दशक में सारी दुनिया में आन्दोलन शुरू हुआ था कि तवाइफ़ के पेशे (वैश्यावृत्ति) और देह-व्यापार को क़ानूनी मान्यता प्रदान की जाए। इसलिए इस पेशे को 'देह-उद्योग' (Prostitution Industry) का नाम दिया गया। दलाल देह-व्यापारी (Sex Entrepreneurs) बन गए। वेश्यालय कम्पनियों की हैसियत से रजिस्टर्ड होने लगे और ज़ाहिर है कि मजबूर औरतें हालात या ज़ुल्म-ज़्यादती से मजबूर होकर 'बिकनेवाली वस्तु' (Commodity) अर्थात् भोग्या बन गईं। इसलिए न्यूज़ीलैंड में क़ानूनी रूप से वैधता प्राप्त करने के बाद यह 'उद्योग' (Industry) 25% सालाना की दर से तरक़्क़ी करने लगा और नीदरलैंड की पूरी अर्थव्यवस्था के 5% में यह छा गया।[1] न्यूज़ीलैंड और ऑस्ट्रेलिया (विक्टोरिया प्रान्त) में भी इससे मिलती-जुलती परिस्थिति है। कुछ देशों में औरतों की कुछ आबादी का 1.5% कारोबार देह-व्यापार में बदल चुका है और छ इलाक़ों में तो सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का 14% इस कारोबार से प्राप्त होता है।[2] उन देशों में उन 'कम्पनियों' के अनेक संगठन हैं। उनके कॉर्पोरेट ऑफ़िस हैं। व्यापार-पत्रिकाओं और समाचारपत्रों के व्यापार पृष्ठों पर उनके लाभ-हानि का लेखा-जोखा प्रकाशित होता है।

नीदरलैंड में वेश्यालयों की एसोसिएशन 'Vereniging Explotenten Relax Bedrilven' अर्थात् 'Relaxing Business' Operators Association वैध रूप से वैसी ही संस्था है जिस तरह अकसर देशों में 'चेम्बर्स ऑफ़ कॉमर्स' होते हैं। यह संस्था पूरी ढिठाई के साथ वेबसाइट बनाकर काम कर रहा है। न्यूज़ीलैंड में, वहाँ के सरकारी आँकड़ों के अनुसार, 383 'देह-व्यापार कम्पनियाँ' और 5932 सेक्स वर्कर्स में से आधे से अधिक 'सेक्स बिज़नेस' के बाक़ायदा कर्मचारी हैं। न्यूज़ीलैंड में इस 'बिज़नेस' के रजिस्ट्रेशन, ऑडिट, इंसपेक्शन इत्यादि की बाक़ायदा सरकारी व्यवस्था मौजूद है।[3] मानो महिलाओं के शरीर का व्यापार उतना ही शिष्टाचार-सम्मत,

1. 'New Rights for Dutch Prostitutes.....', New York Times, 12-08-2001

2. unwire.org/unwire/19990730/4073_story.asp

3. "The Nature and Extent of the Sex Industry in New Zealand" Ministry of Justice, New Zealand, 2008.

वैध और मान्यता-प्राप्त है जितना कि पारले बिस्कुट, टेक्स्ट या लुईस फ़िलिप की शर्ट्स का। हाँ, चमड़े से बने हुए फ़रकोट नापसन्दीदा हो सकते हैं, क्योंकि इससे जानवरों पर ज़ुल्म होता है।

इस बड़े उद्योग के साथ आज की दुनिया में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं जो रुपयों के लिए अपनी बीवियों को अजनबियों के शयनकक्षों (Bedrooms) में भेजते हैं। हमारे देश में भी अब यह कारोबार (अनपढ़ और ग़रीब लोगों में नहीं, उच्च शिक्षा-प्राप्त बड़ी कम्पनियों में नौकरी करनेवाले धनी और शहरी प्रोफ़ेशनलों में) आम हो गया है।

फ़ैशन और कॉस्मेटिक्स

पूँजीवादी साम्राज्य की ओर से औरतों के शोषण का एक और क्षेत्र सौन्दर्य-उत्पाद (Beauty Product) और फ़ैशन है। इससे दुनिया भर के पूँजीपतियों को हर साल 19 बिलियन डॉलर का लाभ होता है। इसके लिए वे अत्याचार और छल-कपट के हर हथियार इस्तेमाल करते हैं। सौन्दर्य-प्रतियोगिताएँ, फ़ैशन के परेड, सेलीब्रिटी कल्चर, अंग्रेज़ी अख़बारों के तीन नम्बर के पृष्ठ (Page 3), औरतों की अनगिनत पत्रिकाएँ, टी वी शोज़ और रियलिटी शोज़ इत्यादि उन हथकंडों में से कुछ हैं। अख़बारों और टी वी के विज्ञापनों का एक बड़ा हिस्सा इस लाभदायक उद्योग के नाम ही समर्पित होता है। छल-कपट से भरे इस खेल का शिकार होकर औरतें अपनी, सेहत, शान्ति और सूकून सब कुछ बर्बाद कर रही हैं। मशहूर मनोविज्ञान-पत्रिका 'साइकॉलोजी टूडे' ने एक मनोरोग 'बॉडी मेनिया' (Body Mania) की पेहचान की है, जिसकी शिकार वे औरतें हो रही हैं, जो अपने को सुन्दर-से-सुन्दर बनाने के लिए किसी भी सतह तक जाने को तैयार रहती हैं।[1]

पूँजीपति वर्ग सबसे पहले सौन्दर्य-प्रतिगिताओं, सेलीब्रिटिज़ और पेज थ्री के द्वारा कुछ ख़ूबसूरत औरतों को मॉडल के रूप में प्रस्तुत करता है और दुनिया भर की नौजवान औरतों में उनकी तरह बनने का जुनून और उन्माद पैदा कर देता है। यह जुनून पूँजीपति वर्ग की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है। इसी जुनून के आधार पर उसके अरबों डॉलर के उद्योग की पूँजीवादी इमारत खड़ी होती है। शुरुआत स्पष्ट रूप से हानिकारक महसूस न होनेवाली

1. J. Rudin (2009) 'Body Mania', Psychology Today, January 1992, Reviewed in July 2009.

क्रीमों, जैलों आदि सौन्दर्य-प्रसाधनों (Beauty Products) से होती है। अनगिनत क़िस्मों के लोशन, तेल, क्रीम, पावडर, लिपस्टिक, फ़ाउंडेशंज़, पॉलिश, शम्पू, डी ओ, कन्डीशनर, वैक्स इत्यादि औरतों को बेची जाती हैं। सिर्फ़ अमेरिका में 8 बिलियन डॉलर के कॉस्मेटिक्स की बिक्री होती है। इस रक़म के तीन चौथाई हिस्से (6 बिलियन डॉलर) से दुनिया के सारे अनपढ़ लोगों की शिक्षा की व्यवस्था की जा सकती है। इन कॉस्मेटिक्स की तैयारी में पूँजीपतियों को औरतों की सेहत और उनकी जान की सुरक्षा और सलामती/से कोई दिलचस्पी नहीं होती।

अमेरिका में, [जहाँ से आनेवाली चीज़ों को हमारे देश में बिना किसी जाँच-परख के क़बूल कर लिया जाता है] सौन्दर्य-प्रसाधनों को जाँच करने और सेहत पर पड़नेवाले उनके प्रभावों का पता लगाने का कोई मेकानिज़्म मौजूद नहीं है। फ़ूड एंड ड्रग्स एडमिनिस्ट्रेशन (जो दवाओं की जाँच करती है) के कार्य-क्षेत्र में ये दवाएँ नहीं आतीं और इन्हें जाँच-परखने की कोई वैकल्पिक व्यवस्था भी नहीं है।

अमेरिका ही की एक संस्था ए डब्ल्यू जी (Environmental Working Group) की रिपोर्ट के अनुसार इन कॉस्मेटिक्स में कई ज़हरीले तत्त्व, यहाँ तक कि कैंसर पैदा करनेवाले रासायनिक पदार्थ पाए गए।[1] इस संस्था ने अमेरिका के विभिन्न शहरों में नौजवान लड़कियों पर एक अध्ययन किया, जिसके अनुसार उन लड़कियों के ख़ून और पेशाब में कॉस्मेटिक्स में इस्तेमाल होनेवाले ज़हरीले रासायनिक तत्त्व पाए गए। ये ज़हरीले रासायनिक तत्त्व – Musks और Parabens, Triclosan, Phathalets – कैंसर तथा हार्मोन्स में बदलाव जैसी गम्भीर बीमारियाँ पैदा करते हैं। ये लड़कियाँ प्रतिदिन औसतन 17 सौन्दर्य-प्रसाधन (कॉस्मेटिक्स) इस्तेमाल करती रही हैं और इनके शरीर में हार्मोन्स में परिवर्तन करनेवाले औसतन 13 रासायनिक तत्त्व (Camicals) पाए गए। ये तत्त्व यौवन-काल (Adolescence) में हार्मोन्स में परिवर्तन, मानसिक स्वास्थ्य, जनन-क्षमता, हड्डियों के बढ़ने जैसे कई मामलों को प्रभावित करते हैं।[2]

अमेरिका ही की एक अन्य संस्था ने ग्राहकों के मार्गदर्शन के लिए हानिकारक रासायनिक तत्त्वों से बनी कॉस्मेटिक्स का एक डेटाबेस तैयार किया है। इस डेटाबेस में जिन कम्पनियों के नाम हैं उनमें L'Oreal,

1. www.cosmeticsdatabase.com/research/fdapetition.php
2. वही।

Procter and Gamble, Combe Inc जैसी मशहूर बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भी शामिल हैं जिनके उत्पाद (Products) हमारे देश में भी बहुतायत से बिकते हैं।[1]

दुबला होने की दीवानगी (Slimming Mania)

इन वस्तुओं को जी भरकर बेचने और अपनी झोली भरने के बाद ब्यूटी इंडस्ट्री अगले पड़ाव की ओर क़दम बढ़ाती हैं, जिसमें बारी आती है वज़न कम करने की। इन कम्पनियों ने अपने विज्ञापनों के द्वारा यह भ्रम फैला रखा है कि सुन्दर होने के लिए दुबला-पतला और लम्बा होना ज़रूरी है। इसलिए दुबला करने का एक पूरा उद्योग (Industry) हर शहर में मौजूद है। उनके दुबला कराने के साधनों में जिगर को तबाह करनेवाली गोलियाँ (Slimming Pills) शामिल होती हैं या दिल को बर्बाद करनेवाले Mentermine नामक रासायनिक तत्त्व पर आधारित दवाएँ।[2]

अंग्रेज़ी दैनिक 'द हिन्दू' ने औरतों में दुबली होने की दीवानगी (Slimming Mania) पर टिप्पणी करते हुए सही लिखा है कि दो नौजवान मर्द और एक नौजवान औरत एक कॉफ़ी शॉप में दाख़िल होते हैं एक मर्द कॉफ़ी का आर्डर देते हुए कहता है, "एक बिना चीनी।" बैरा कॉफ़ी लाता और बिना चीनी की कॉफ़ी महिला के सामने रखता है। यह विचार उसके उस अनुभव पर आधारित है कि महिलाएँ ही हैं जो दुबली रहने के लिए चीनी से परहेज़ करती हैं।"[3]

मैककिंसी की रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में दुबला करने की इंडस्ट्री से पूँजीपति वर्ग 2000 करोड़ रुपये कमा रहा है। पहले जंक फ़ूड (Junk Food) खिला-खिलाकर मोटा करता है तथा उससे भी करोड़ों रुपये कमाता है। उसके बाद दुबला करने का अभियान चलाता है और उससे भी करोड़ों रुपये कमाता है। 'गोल्ड' और 'प्लाटिनम कार्ड' तथा 'कॉर्पोरेट मेम्बरशिप' जैसे सम्मोहक ऑफ़र्स के साथ 'वेट मैनेजमेंट' (Weight Management) की ये कम्पनियाँ अपने ग्राहकों से हर महीने 3,000 से 30,000 रुपये तक वसूल करती हैं।[4] वज़न घटाने के इन केंद्रों के अलावा इंटरनेट पर भी यह काफ़ी लाभदायक कारोबार है, जहाँ अनगिनत वेबसाइट्स

1. वही।
2. Dr. Ray Sahelian M. D, 'Orlistat Diet Pill', www.raysahelian.com/orlistat.html
3. 'Obese or Obsesses?' The Hindu, Nov. 4,2004
4. Sona Wadhwa, 'Lightness of Wellbeing', Outlook,November 11-2002

वज़न घटाने की रहनुमाई के नाम पर करोड़ों डॉलर कमा रही हैं। सोशलनेट वर्किंग और बलॉग्स को इस्तेमाल करते हुए, दुबले होने और कम खाने की प्रतियोगिता के द्वारा ये साइट्स दुबले होने का ख़तरनाक जुनून पैदा करती हैं। रॉयल कॉलेज ऑफ़ साइकॉट्रिस्ट के कुपोषण से सम्बद्ध- रोग-विभाग ने उन वेबसाइट्स की बहुतायत के सम्बन्ध में गम्भीर चिन्ता प्रकट की है।[1]

चिकित्सा-विज्ञान (Medical Science) में 'एनोरेक्सिया नर्वोसा' (Anorexia Nervosa) को बाक़ायदा एक बीमारी के रूप में मान्यता मिल गई है। इससे ग्रस्त रोगी (महिलाएँ) वज़न बढ़ने के डर से भूखा रहना शुरू कर देता है। एनोरेक्सिया के 5% रोगी भूखे रहने से मौत का शिकार हो जाते हैं। यूरोप और अमेरिका में यह रोग बहुत ज़्यादा है।[2]

यह रोग असल में मॉडलों से शुरू हुआ, जिनपर उनके पूँजीपति आक़ाओं की ओर से दुबला नज़र आने का सख़्त दबाव होता है। मॉडल केट मोस (Kate Moss) के बारे में कहा जाता है कि वह हर दिन सलाद का सिर्फ़ एक पत्ता खाती है। नवम्बर 2007 में इसराईली मॉडल हीला (Hila Elmalich) की मौत हो गई। उसका वज़न सात साल की बच्ची के बराबर था। उन मॉडलों को मीडिया आदर्श के रूप में प्रस्तुत करता है। उनकी नक़ल में आम लड़कियाँ भी इस पागलपन के पीछे पड़ जाती हैं।

एक कुपोषण (Malnutrition) तो वह है जिसका शिकार महिलाएँ पारम्परिक समाजों में लैंगिक भेदभाव की वजह से होती हैं और एक कुपोषण यह है जिसका आज की औरतें लैंगिक भेदभाव ही के कारण दुबली होने के नामपर शिकार होती हैं। फिर उन्हें सलाह दी जाती है कि खाने की इच्छा (Appetite) पर कंट्रोल करने का एक आसान तरीक़ा सिगरेट पीना है इसलिए वे सिगरेट पीना शुरू करके फैफड़ों, गर्भाशय और छाती के कैंसर के लिए मार्ग प्रशस्त कर देती हैं। कई शोध-अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि अकसर नौजवान लड़कियों में सिगरेट पीने की आदत वज़न कम करने के जुनून के दौरान पैदा होती है।[3]

शारीरिक बदलाव (Body Modification)

इसके अगले चरण में बारी आती है शारीरिक बदलाव (Body

1. 'Bomingpro-Anorexia Websites', Times of India, 19-09-2009
2. Upasna Mallick 'Anorexia and Fashion Industry', The views Papre April 18-2009.
3. Saarni et. al 'Intentional Weight Loss and Smoking in Young Adults', Intl. Journ. of Obesity (2004), 796-802

Modification) की। यहाँ भी एक बहुत बड़ा उद्योग काम कर रहा है। यह 30 बिलियन डॉलर का वार्षिक कारोबार है, जिसमें लगभग दो लाख सर्जन काम कर रहे हैं। केवल अमेरिका में 13 बिलियन डॉलर का लाभ इस कारोबार से कमाया जाता है।[1]

अनगिनत विज्ञापन हैं, समाचारपत्र और महिला-पत्रिकाएँ हैं, जिनमें 'विशेषज्ञ' सुन्दरता को बढ़ाने के लिए मुफ्त मशवरों के कॉलम चलाते हैं। औरतों और लड़कियों को यह समझाते हैं कि आप अपने शरीर के हर अंग को बदल सकती हैं और 'अपने सपनों की काया' (Dream Body) की मालिक बन सकती हैं। एक विशेष प्रकार की पेचीदा सर्जरी 'एबडॉमिनोप्लास्टी' (Abdominoplasty) के ज़रीए से पेट के आकार को बदला जाता है; 'ब्लेफ़ेरोप्लास्टी' (Blepharoplasty) सर्जरी के ज़रीए से पलकों को अतिरिक्त प्लास्टिक के द्वारा नया रूप दिया जाता है; छातियों को ब्रेस्ट इम्प्लांट मैस्टोपेक्सी (Breast Implant Mastopexy) और कुल्हों को 'बट्ट इम्प्लांट' (Butt Implant) में सिलीकॉन भरकर उनका आकार बढ़ाया या घटाया जाता है। नाक, कान और चेहरे की बनावट बदली जाती है (Rhinoplasty, Octoplasty, Rhytidectomy); शरीर से चर्बी निकाली जाती है। ऑपरेशन के ज़रीए से आँतों को छोटा (Bariatic Surgery) किया जाता है (ताकि खाना कम खाया जाए और वज़न कम रहे)। ख़तरनाक लेज़र किरणों से त्वचा (Skin) की सतह बदली जाती है। होंठ, रुख़सार (गाल), ठोड़ी, और पेशानी की बनावट बदली (Browplasty and Chin Implant) जाती है।

सारी पश्चिमी दुनिया, विशेषकर उत्तरी अमेरिका में अत्यन्त कोमल अंगों की सर्जरी Vaginoplasty भी बहुत आम हो चुकी है। अनगिनत टी वी सीरियल और महिला-पत्रिकाएँ 'सुन्दर और आकर्षक यौनांग' (Designer Vagina) की प्रेरणा देती हैं और महिलाएँ तथा लड़कियाँ अपने शरीर के विभिन्न अंगों को पीड़ादायी चीड़-फाड़ के लिए ख़ुशी-ख़ुशी पेश कर देती हैं। अमेरिका के स्त्री-रोग-विशेषज्ञों ने इस सर्जरी के विरुद्ध चेतावनी दी है।[2] लेकिन इसके बावजूद केवल अमेरिका में हर साल हज़ारों औरतें इस तरह के ऑपरेशन करवाती हैं। भारत में भी यह रुझान तेज़ी से बढ़ रहा है।[3]

---

1. Ritu Sharma 'Cosmetic Surgery Finding Home in Indian Market', Chilli Breeze, September 2008.
2. ACOG, vaginal 'Rejuvenation and Cosmetic Vaginal Procedures', Obstet. Gynecol. (Sept. 2007) 737, 738.
3. Debarati Palit, 'Pune Women are undergoing Vaginal.....' Midday, 09-07-2009.

ये पेचीदा सर्जरियाँ सेहत को तबाह किए बिना पूरी नहीं होतीं।[1] कॉस्मेटिक सर्जरी (Cosmetic Surgery) और बॉडी मॉडीफ़िकेशन (Body Modification) की इस दौड़ से स्वयं डॉक्टर परेशान हैं।

ब्रिटिश प्लास्टिक सर्जनों के संगठन 'बापूस (BAAPS) ने अपने एक बयान में गुमराह करनेवाले विज्ञापनों पर गम्भीर चिन्ता प्रकट की थी। संगठन का कहना है कि महिला-पत्रिकाओं में मॉडलों में ऐसे शारीरिक बदलाव, विशेष रूप से छातियों की बनावट और आकार में परिवर्तन (Breast Implant) दर्शाए जा रहे हैं, जो चिकित्सा-विज्ञान की दृष्टि से असम्भव है—'लंच की अल्प अवधि में चेहरे की बनावट में परिवर्तन', 'बिना किसी तकलीफ़ के कमर के आकार में बदलाव' जैसे विज्ञापन और मिथ्या कथाओं के द्वारा नौजवान लड़कियों को उन ख़तरनाक सर्जरियों के फ़ैसले के लिए आमादा किया जाता रहा है, जबकि ये सारे ऑपरेशन बहुत सीरियस ऑपरेशन हैं और अनिवार्य होने पर ही इनका फ़ैसला किया जाना चाहिए।[2]

पूँजीवादी साम्राज्य ने लाखों औरतों और कम उम्र लड़कियों के शरीरों और उनकी सेहत को अपने लाभ का आसान साधन बना रखा है। 2002 ई. में ए बी सी चैनल ने एक प्रोग्राम 'एक्सट्रिम मेकऑवर' (Extreme Makeover) शुरू किया है। इसमें आम औरतें अपने शरीर में परिवर्तन की इच्छा लेकर पेश होती हैं। उनके लम्बे ऑपरेशन किए जाते हैं। ऑपरेशन के बाद वे और उनके रिश्तेदार अपने-अपने अनुभवों का वर्णन करते हैं। ऑपरेशन के द्वारा उनके शरीर के हर अंग में बदलाव लाया जाता है। इस प्रकार शारीरिक मशीन के हर अंग का मनचाहा डिज़ाइन हो सकता है।[3] एक कुरूप (बदसूरत, Ugly) औरत डेल्स विलियम्स ने चैनल के ख़िलाफ़ मुक़दमा दायर किया कि चैनल के गुमराह करनेवाले तरीक़ों ने उसकी बहन की जान ले ली। वेल्स इस शो को देखने के बाद से अपनी आँखों, दाँतों और सीने की बनावटों पर लज्जित थी। चैनल के डाक्टरों ने उसे यक़ीन दिलाया कि उसकी 'बनावट' बहुत 'सुन्दर' बना दी जाएगी। फिर चैनल ने अपने प्रोग्राम के अनुसार वेल्स की बहन से उसकी कुरूपता पर टिप्पणियाँ करवाईं। (पहले औरत की कुरूपता पर उसके रिश्तेदारों से टिप्पणियाँ करवाई जाती हैं, फिर ऑपरेशन के बाद उसी

---

1. Sreyashi Dutta, 'Cosmetic Surgery Market', Frost and Sullivan, 30th Dec. 2008.
2. 'Cosmetic Surgery in Britain under Fire' in The Medical News, September 22-2008.
3. en.wikipedia.org/wiki/extreme_makeover

प्रकार उसकी सुन्दरता का बखान करवाया जाता है) और जब चैनल के डॉक्टर उसे सुन्दर नहीं बना सके तो बेचारी बहन अपनी कटु आलोचनाओं से आहत होकर आत्महत्या कर बैठी।[1]

2006 में केवल अमेरिका में ही 1.1 करोड़ कॉस्मेटिक ऑपरेशन किए गए।[2] अर्थात् अमेरिकी आबादी के 3.5 भाग ने केवल एक साल में यह ऑपरेशन करवा लिया। इन ऑपरेशनों को करानेवालों में 90 प्रतिशत औरतें ही होती हैं। हमारे देश में भी अब यह लगभग 500 करोड़ रुपये का कारोबार है।[3]

जो औरतें सुन्दरता और फ़ैशन के लिए कॉस्मेटिक सर्जरी जैसे अत्यन्त घातक क़दम उठाने के लिए तैयार नहीं होतीं उनसे लाभ कमाने के लिए पूँजीवादी साम्राज्य के पास दूसरे आसान तरीक़े भी मौजूद हैं।

शरीर में छेद और टैटू (Body piercings Tatto)

शरीर में छेद (Body Piercing), टैटू के फ़ैशन को हमारे देश सहित पूरी दुनिया में, पिछले कुछ सालों में, बड़ी लोकप्रियता मिली है। कुछ साल पहले कान और नाक की बालियों के लिए रूढ़िवादी परिवारों में किए जानेवाले छेदों की कटु आलोचना की जाती थी और उन्हें औरतों पर अत्याचार की संज्ञा दी जाती थी। लेकिन अब दुनिया भर की इंडस्ट्री को लाभ पहुँचाने के लिए औरतों को शरीर के हर अंग पर छेद करवाने के लिए आमादा कर लिया गया। इस प्रकार होठों, जीभ, ठोड़ी, पलकों और भौओं, पेट, नाभि और दूसरे अंगों में छेद करवाने, रिंग पहनने इत्यादि का फ़ैशन आम हो गया।[4] ज्वेलरी इंडस्ट्री के शेयर-होल्डरों की संतुष्टि, नाक, कान, गर्दन, कलाई और पैर तक फैले गहनों से नहीं हो रही थी। (जहाँ कपड़े नहीं होते वहाँ गहना होता है। जब सारा शरीर नंगा है तो हर जगह के लिए गहने की ज़रूरत तो होगी ही।) इसलिए गुप्तांगों से लेकर शरीर के हर अंग के लिए गहने बनाए गए। गहने पहनने के लिए उन अंगों में छेद किए जाने लगे। आज पूरी पश्चिमी दुनिया में औरतों के शरीर को छलनी करने की दुकानें जगह-जगह खोली गई हैं। कान

---

1. 'Ugly Women Sues TV Show', Indian Express,
Sept. 20-2005
2. Michael Gortan, 'What is a Surgeon not a Surgeon', Surgical News, Vol-8, No. 102007
3. Ritu Sharma et.al 'Cosmetic Surgery.....', konceptanalytics, asmsummer, P-62
4. Racquel Kirsch 'Body Piercing', the Mc Gill Tribune, 31st Oct. 2000.

और नाक के छेदों के विपरीत कोमल अंगों में छेद करना आसान नहीं है। इसके लिए पेशेगत कुशलताओं की बहुत ज़रूरत होती है। इसलिए पूँजीवादियों को एक नई इंडस्ट्री मिल गई। इसके अतिरिक्त असल मक़सद ज्वेलरी उद्योग को लाभ पहुँचाना है जिसकी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में हमेशा केन्द्रीय भूमिका रही है। हमारे देश में यह रुझान किस तेज़ी से बढ़ रहा है इसका अन्दाज़ा इस बात से होता है कि केवल मुम्बई के एक केन्द्र में प्रतिदिन दस औरतें छेद करवाती हैं। सबसे अधिक लोकप्रिय भौंओं और नाभियों के छेद हैं और औरतें अपने शरीर में 18-18 छेद तक करवाती हैं।[1]

इसी प्रकार मॉडलों और हीरोइनों के ज़रीए से टैटू का फ़ैशन आम किया गया। शरीर के विभिन्न अंगों पर गुदवाने की इस दीर्घ और पीड़ादायक क्रिया के लिए औरतें आसानी से तैयार हो जाती हैं। कुछ औरतें तो अपने पूरे-पूरे शरीर पर टैटू गुदवाती हैं।[2] फिर कुछ दिनों बाद पुराना डिज़ाइन अच्छा नहीं लगता अथवा जिस बॉयफ्रेंड का नाम या चित्र गुदवाया था, उससे रिश्ता ख़त्म होकर दूसरे बॉयफ्रेंड से संबंध क़ायम हो जाता है तो टैटू को बदलने के लिए पेचीदा और पीड़ादायक ऑपरेशन करवाए जाते हैं और इन सबसे पूँजीपतियों को फ़ायदा पहुँचता है। टैटू से होनेवाली हानियों के बारे में रेड-क्रॉस और दूसरी संस्थाएँ टैटू की हुई औरतों से चार माह से एक साल तक की अवधि तक रक्तदान स्वीकार नहीं करतीं[3] जो औरतें इसके लिए भी तैयार न हों तो उनके लिए आसान से आसान बॉडी आर्ट की सुविधाएँ भी मौजूद हैं। प्रोफ़ैशनल डिज़ाइनर्स ऊँची क़ीमत वुसूल करके मेहंदी और कृत्रिम रंगों के द्वारा शरीर के विभिन्न अंगों पर और कभी पूरे शरीर पर ही चित्रकारी करते हैं। अकसर औरतें चाहती हैं कि ये महंगी चित्रकारी उनके शरीर पर लम्बे समय तक बनी रहे। यह काम प्राकृतिक मेहंदी और अन्य प्राकृतिक पदार्थों से नहीं हो सकता। ये बनावटी चिह्न लम्बे समय तक शरीर पर बने रहें, इसके लिए ऐसे कृत्रिम रासायनिक रंगों का इस्तेमाल किया जाता है, जो ख़ुजली, एलर्जी और कभी-कभी कैंसर इत्यादि का भी कारण बनते हैं।

औरतों के बीच इन सारी चीज़ों को लोकप्रिय बनाने के लिए

---

1. Shilpi Kumar, 'The Business of Body Art', DARE, 31stAug 2009.

2. Pamphlet 'Tattoos,Body Piercing and other Skin Adornments by American Academy of Dermatology (2004).

3. blood.co.uk/page,b10faq.html

योजनाबद्ध तरीक़े से सौन्दर्य-प्रतियोगिताएँ कराई जाती हैं। सुन्दरता की रानी का ताज वास्तव में पूँजीवादियों की ग़ुलामी का तौक़ होता है। एक मूक जानवर की तरह 'सुन्दरता की रानी' पूँजीवादियों के आदेशों का पालन करती है। सौन्दर्य-प्रसाधनों से लेकर कॉस्मेटिक सर्जरी तक, पूँजीवादी वर्ग जिन-जिन चीज़ों को जनसाधरण में लोकप्रिय बनाना चाहता है उन्हें उसके शरीर पर आज़माता है। वह उन सभी उत्पादों (Products) और सेवाओं (Services) की प्रयोगशाला और व्यावहारिक प्रमाण बनकर शहर-शहर घूमती फिरती है।

यही मामला फ़िल्मी हीरोइनों, पेज थ्री पार्टियों, पोप-सिंगरों और दूसरी मशहूर महिलाओं (Celebrities) के साथ होता है।

उपभोक्तावाद और आर्थिक दबाव

पूँजीवादी साम्राज्य ने 'उपभोक्तावाद' (Consumerism) और भोग-विलास की जो मानसिकता बनाई है उसका सबसे अधिक असर भी औरतों पर ही पड़ता है।

विज्ञापन अधिकतर औरतों (और बच्चों) को सम्बोधित करके बनाए जाते हैं। जीवन-स्तर की होड़ मनोवैज्ञानिक रूप से औरतों में अधिक होती है। जब विज्ञापनों के द्वारा कृत्रिम रूप से जीवन-स्तर को उच्च बनाने की विचारधाराएँ पैदा की जाती हैं और उपभोक्तावाद का निरन्तर दबाव क़ायम किया जाता है तो इसके हानिकारक प्रभाव सबसे अधिक औरतें ही ग्रहण करती हैं।

उपभोक्तावाद और अपव्यय के रुझान बढ़कर मनोवैज्ञानिक रोगों का रूप ग्रहण कर रहे हैं। मनोरोग-विशेषज्ञों के अनुसार, धीरे-धीरे आदमी ख़रीदारी और ख़र्च करने (Spendig) का वैसा ही आदी (Adict) हो जाता है जिस तरह नशे का। मुम्बई के एक मनोचिकित्सक असीत सेठ के अनुसार, इस प्रकार के रोगी का दिमाग़ ख़रीदारी करने से एक प्रकार का रासायनिक पदार्थ उत्सर्जित करता है, जिसे एंडोर्फ़िन्स (Endorphins) कहते हैं। इस पदार्थ के कारण आदमी को धीरे-धीरे ख़रीदारी की लत (addiction) लग जाती है। ज़रूरत हो या न हो, शॉपिंग मॉलों में जाकर बेहिसाब ख़रीद करने तक उसे चैन नहीं आता। पैसे न हों तो वह क़र्ज़ पर क़र्ज़ लेता चला जाता है और बिलकुल एक शराबी की तरह हर हाल में अपनी लत पूरी करना चाहता है। इसलिए विश्व-स्वास्थ्य-संगठन (World Health Organization, WTO) और डॉक्टर इसे एक रोग 'पैथोलॉजिकल डिसऑर्डर' (Pathological Disorder) की संज्ञा दे रहे हैं। इस रोग का शिकार भी

अधिकतर औरतें ही हैं।[1]

पिछले कुछ सालों में हमारे देश में खुशहाल और पढ़ी-लिखी महिलाओं में आत्महत्या के रुझान बढ़े हैं। विशेषज्ञ इस रुझान को भी उपभोक्तावाद और उच्च जीवन-स्तर के दबाव और उससे सम्बद्ध तनाव से जोड़ते हैं। उपभोक्तावाद और भोग-विलासपूर्ण जीवन-शैली ने कारों, फ्लैटों और ब्रांडेड कपड़ों और जूतों की प्रतिस्पर्धाओं की ऐसी लत लगाई है कि इसमें पड़कर सुख-चैन नष्ट हो जाता है।[2]

छह महीने की गर्भवती 24 वर्षीया सुजाता फाँसी लगाकर आत्महत्या कर लेती है। उसका कारण यह विचार था कि उसका एम एन सी में एक मैनेजर पति अभी इतना खुशहाल नहीं हो सका है कि उसका होनेवाला बच्चा एक खुशहाल ज़िन्दगी गुज़ार सके। 25 साल की संगीता की आत्महत्या का कारण यह है कि उसकी सभी सहेलियों में वह अकेली थी जिसके पास उसका अपना फ्लैट नहीं था।[3]

आँकड़े बताते हैं कि पूरी दुनिया में पढ़ी-लिखी नौजवान महिलाओं में आत्महत्या की तादाद तेज़ी से बढ़ रही है। अगर एक औरत आत्महत्या करती है तो 20 औरतें इसकी कोशिश करती हैं। विश्व-स्वास्थ्य-संगठन (WTO) का कहना है कि अगले दशक में 'डिप्रेशन' (Depression) औरतों का सबसे बड़ा हत्यारा होगा।[4] 2001 की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में नौजवान शहरी औरतों में सबसे आम रोग यू डी डी (Unipolar Depression Disorder) अर्थात् निरन्तर अवसाद और घबराहट की स्थिति होगी।[5] मनोविज्ञानी इस रोग का बड़ा कारण लोभ-लालच, भोग-विलास और उपभोक्तावाद को ठहराते हैं। इस रोग में दुनिया भर में 1.86 प्रतिशत औरतें ग्रस्त होकर लाचार हो जाती हैं।[6]

यह संख्या हार्ट अटैक और कैंसर से भी अधिक है। मुम्बई के डॉक्टरों का कहना है कि खुशहाल घराने की औरतें और कामकाजी महिलाएँ

---

1. Priyanka Sinha, 'Speditis', Outlook Money, Oct. 7, 1998
2. In An Outpost of the Global Economy : Work and Workers in India's Information Technology Industry. Edited by Carol Upadhyay and A. R. Vasavi, Routledge, London, New Delhi. 2008.
3. 'Heart Break House', Telegraph May 08-2007
4. As quoted in Catharine Paddock 'Women who have migraine', Medical News Today, 10-01-2007.
5. The World Health Report 2001, P-29, 30.
6. वही

अपना दिन पूरा करने के लिए 'अल्पराज़ोलाम' जैसी तनाव रोधी दवा (Anti Anxiety Drugs) पर निर्भर रहती हैं। ये औरतें गोलियाँ पानी की तरह लेती हैं। 30 वर्षीया सुजाता द्विवेदी एक समय में 30-30 गोलियाँ खाती है। एक दिन अनिद्रा से तंग आकर उसने 200 गोलियाँ खाईं और अस्पताल में जागी।[1]

यह उपभोक्तावाद और जीवन-स्तर की दौड़ ही है, जिसने दहेज के अभिशाप को जन्म दिया। अब दुल्हन को जलाने का अमानवीय कर्म परम्परा-प्रिय अनपढ़ घरानों तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि अंग्रेज़ी बोलनेवाले, शिक्षित और ख़ुशहाल घरानों में भी पत्नियाँ जलाई जा रही हैं। आई ए एस अधिकारी की आई ए एस अधिकारी पत्नी भी दहेज के नाम पर उत्पीड़न का शिकार है। दिल्ली महिला आयोग के अनुसार उनके पास आनेवाली शिकायतों में से 10 प्रतिशत का सम्बन्ध समाज के अत्यन्त सुखी-सम्पन्न और सभ्य (Creme de la creme) वर्ग से होता है।[2]

यह उपभोक्तावाद द्वारा उत्पन्न अनन्त भोग-विलास की लालसा ही है कि मनुष्य वस्तुओं और रुपयों-पैसों के पीछे दीवाना है। यह कभी भ्रष्टाचार (Corruption) के रूप में प्रकट होता है, कभी दहेज की हिंसक माँगों के रूप में और सब कुछ होते हुए भी 'और अधिक की भूख' बहुओं

1. The Telegraph, May 08, 2007.

2. Rumu Banerjee, Times of India, Sept. 13, 2005.

इस्लामी दृष्टिकोण

इस्लाम हर स्तर पर इनसाफ़ और न्याय का झंडावाहक है। उसके सिद्धान्त जीवन के हर क्षेत्र में अन्याय और शोषण की जड़ें काटते हैं। इस्लामी धर्म-विधान के महिलाओं से सम्बन्धित सिद्धान्त भी समानता और न्याय के द्योतक हैं और उन सारे रास्तों को बन्द कर देते हैं, जिनसे पूँजीवादी वर्ग उनका शोषण करता है। इस्लाम औरतों के 'स्त्रीत्त्व' और उनकी 'अस्मिता' को सुरक्षा एवं प्रतिष्ठा प्रदान करता है। औरतों को उनके सारे अधिकार उनके नारी-व्यक्तित्व, उनकी अस्मिता और आवश्यकता का लिहाज़ करते हुए देता है। इस प्रकार एक मुसलमान औरत इस्लाम में वास्तविक लैंगिक समानता पाकर पूँजीवादियों द्वारा गला फाड़-फाड़कर लगाए जा रहे तथाकथित लैंगिक समानता के छल-कपटपूर्ण नारे से धोखा नहीं खाती।

करियर और आर्थिक व्यस्तता के सम्बन्ध में इस्लाम का दृष्टिकोण

इस्लाम ने औरत को अपनी शिक्षा और योग्यता के अनुसार समाज और सभ्यता की सेवा करने की इजाज़त दी है। अल्लाह के आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल.)[1] के ज़माने में भी बहुत-सी औरतें विभिन्न आर्थिक कार्यों को अंजाम देती रही हैं। हमारे विद्वानों ने आर्थिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त अपने समय और अपनी योग्यता के बेहतर इस्तेमाल, समाज और संस्कृति की सेवाओं, आय में वृद्धि और अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए भी औरतों को काम करने की इजाज़त दी है। (मौलाना जलालुद्दीन उमरी, इस्लाम की पारिवारिक व्यवस्था, पृ.117-121, संस्करण 2008)

औरत पर कोई आर्थिक ज़िम्मेदारी नहीं है

पूँजीवादी अवधारणा ने अपनी ज़रूरत के लिए औरत को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने का सपना दिखाया। और इसका कारण यह बताया कि आज़ादी उसे ताक़तवर (Empowered) बनाती है। इस्लाम की दृष्टि में यह विचार ग़लत है। इस्लाम ने पारस्परिक सहयोग, साझेदारी और प्रेम-मुहब्बत को परिवार की बुनियाद ठहराया है। घर की ज़िम्मेदारियों में काम के बँटवारे

1. सल्ल. : इसका पूर्ण रूप है सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। (अर्थात् अल्लाह उनपर सलामती और रहमत की बारिश करे।)

को परिवार की बुनियाद ठहराया है। घर की ज़िम्मेदारियों में काम के बँटवारे के तहत औरत को परिवार की देखभाल करनेवाली बनाया है। आर्थिक कार्य करने के लिए औरत को केवल अनुमति है। उसपर कोई आर्थिक दायित्व नहीं डाला गया है। घर के आर्थिक मामलों का पूरा ज़िम्मेदार केवल मर्द है। पत्नी के सारे ख़र्चों की ज़िम्मेदारी उसकी है—

> "पति पत्नियों के संरक्षक और निगराँ हैं, क्योंकि अल्लाह ने उनमें से कुछ को कुछ के मुक़ाबले में आगे रखा है और इस वजह से (भी) कि पति उनपर अपने माल ख़र्च करते हैं।"
>
> (क़ुरआन, 4:34)

> "माँओं का खाना और पहनना दस्तूर के मुताबिक़ बच्चे के बाप पर अनिवार्य है।"
>
> (क़ुरआन, 2:233)

अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा—

> "औरतों का तुमपर हक़ है कि तुम उन्हें अच्छे तरीक़े से खिलाओ, पिलाओ और कपड़े पहनाओ।" (हदीस : मुस्लिम)

अगर पति न हो (अर्थात स्त्री विधवा या तलाक़शुदा हो) तो इस्लाम बाप को औरत के पालन-पोषण का ज़िम्मेदार बनाता है और अगर कोई पालन-पोषण करनेवाला न हो तो उसके भरण-पोषण की ज़िम्मेदारी इस्लामी राज्य की होती है। अगर पत्नी कमाती भी है तो उसकी कमाई पर पूरा अधिकार केवल उसी का है। पति और ससुराल के रिश्तेदार न औरत को नौकरी करने पर मजबूर कर सकते हैं और न नौकरी करनेवाली औरतों को अपनी आमदनी देने पर मजबूर कर सकते हैं। और कमानेवाली औरत का सारा खाना-ख़र्च भी उसके पति ही के ज़िम्मे है—

> "और तुम उस चीज़ की कामना न करो जिसमें अल्लाह ने तुममें से किसी को किसी से उच्च रखा है। मर्दों के लिए उसमें से हिस्सा है, जो उन्होंने कमाया और औरतों के लिए उसमें से हिस्सा है, जो उन्होंने कमाया। और अल्लाह से उसका उदार दान माँगा करो। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जाननेवाला है।" (क़ुरआन, 4:32)

इस्लाम का यह सिद्धान्त औरत के लिए नौकरी या आर्थिक गतिविधियों को केवल उसकी दिलचस्पी या सांस्कृतिक सेवाओं तक सीमित करता है। सामान्य परिस्थिति में औरत या तो अपने आपको व्यस्त रखने के लिए आर्थिक और पेशेगत व्यस्तताओं को अपना सकती है या अपने ज्ञान

और कला को इस्तेमाल करने के लिए या किसी बड़ी सांस्कृतिक या सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए। चूँकि यह काम उसकी ज़िम्मेदारियों में शामिल नहीं है, इसलिए इस काम के लिए न उसे तनाव में रहने की कोई ज़रूरत है, न किसी परेशानी को झेलने की। अगर उसके हालात और काम करने की जगह की दशा और काम करने की जगह अनुकूल है (अर्थात यह काम या व्यस्तता उसके लिए सुखद अनुभव है) और इसके साथ उसकी पारिवारिक ज़िम्मेदारियों और धार्मिक अपेक्षाओं की पूर्ति आसानी से सम्भव है तो वह ख़ुद अपने फ़ैसले से और पति की अनुमति से ऐसे काम को अपना सकती है। इससे प्राप्त होनेवाली आय को अपने आपपर, अपने माँ-बाप या रिश्तेदारों पर, ग़रीबों और अल्लाह की राह में या चाहे तो अपनी मर्ज़ी से पति और बच्चों की ज़रूरतों पर भी ख़र्च कर सकती है। लेकिन यह सारा का सारा मामला उसकी मर्ज़ी और ख़ुशी पर निर्भर है। इस तरह औरत के लिए आर्थिक कार्य एक स्वेच्छिक काम रह जाता है। वह उसे जब चाहे अपना ले और उसे अपनी असल ज़िम्मेदारियों की राह में रुकावट महसूस करे तो या अपनी सेहत, शान्ति-सुकून या पारिवारिक जीवन के लिए हानिकारक महसूस करे उसे छोड़ सकती है। इस्लाम का यह सन्तुलित दृष्टिकोण न औरत को पारम्परिक समाजों की तरह घर की चारदीवारी में बन्द करके उसकी योग्यताओं के नष्ट होने का कारण बनता है और न आधुनिक और तथाकथित विकासशील समाज की तरह उसपर दोहरा बोझ डालकर उसकी सेहत और सुख-शान्ति को बर्बाद करने का माध्यम बनता है।

औरत की असल ज़िम्मेदारी घर है

इस्लाम यह भी कहता है कि औरत की असल ज़िम्मेदारी, जिसके बारे में वह अल्लाह के सामने उत्तरदायी है, उसका घर है। उसे पहली प्राथमिकता घर को देनी है, क्योंकि यह उसकी ज़िम्मेदारियों में शामिल है। वह अपने पति के लिए सुख-शान्ति का कारण है—

> "और यह (भी) उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारी ही सहजाति से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए, ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो। और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा कर दी। और निश्चय ही इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार से काम लेते हैं।" (क़ुरआन, 30:21)

पति, उसके घर तथा बच्चों के बारे में अल्लाह के सामने उत्तरदायी है—

> "तुममें से हर एक ज़िम्मेदार है और अपने अधीनस्थों के बारे में

जवाबदेह है। औरत अपने पति के घर और उसके बच्चों के प्रति उत्तरदायी और निगराँ है।" (हदीस : बुख़ारी)

"ऊँट पर सवार होनेवाली (अरब की) औरतों में सबसे बेहतर क़ुरैश की (वह) नेक और परहेज़गार औरत होती है, जो अपने छोटे बच्चों पर मेहरबान और पति के मामलों की देखभाल करनेवाली होती है।" (हदीस : बुख़ारी)

आर्थिक व्यस्तता की सशर्त अनुमति

उपर्युक्त ज़िम्मेदारियों को पूरी करते हुए अगर औरत आर्थिक कार्य करती है तो उसे उसकी अनुमति है। लेकिन यह अनुमति कुछ शर्तों के साथ है। उनमें विशेषकर नीचे लिखी शर्तें ध्यान देने योग्य हैं—

(1) वह पराए मर्दों के सामने बिना परदे के नहीं जा सकती। उनके सामने जाते हुए उसे इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार शालीन वस्त्र पहनने और परदे की उपयुक्त व्यवस्था करनी होगी—

"और ईमानवाली औरतों से कह दो कि वे भी अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें और अपने सिंगार प्रकट न करें, सिवाय उस (हिस्से) के जो खुला रहता है।" (क़ुरआन, 24:31)

"ऐ नबी! अपनी पत्नियों और बेटियों और मुसलमानों की औरतों से कह दो कि (बाहर निकलते समय) वे अपने ऊपर अपनी चादरें ओढ़ लिया करें इससे इस बात की अधिक सम्भावना है कि वे पहचान ली जाएँ (कि वे पाक दामन औरतें हैं) फिर उन्हें (आवारा बाँदियाँ समझकर ग़लती से) न सताया जाए।"

(2) हाव-भाव और बातचीत में गरिमा अपनानी चाहिए। और ऐसी बेधड़क बातचीत से बचना चाहिए जिससे चरित्रहीनता की राहें खुलती हों—

"ऐ नबी की स्त्रियो! तुम सामान्य औरतों में से किसी की तरह नहीं हो, अगर तुम परहेज़गार रहना चाहती हो तो (मर्दों से ज़रूरत के अनुसार) बात करने में नर्म लहजा न अपनाना; जिसके दिल में (कपट की) बीमारी है (कहीं) वह लालच करने लगे और (हमेशा) शक और लचक से सुरक्षित बात करना।" (क़ुरआन, 33:32)

(3) किसी ग़ैर-महरम मर्द के साथ अकेले में नहीं रहना चाहिए—

"कोई आदमी किसी औरत के साथ अकेले में उसके महरम

के बिना न बैठे।" (हदीस : बुख़ारी)

अल्लाह के आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा :

"जो (ग़ैर) औरत और मर्द एकान्त में रहते हैं तो उनके साथ तीसरा शैतान होता है।" (हदीस : मुस्नद अहमद)

(4) मर्दों से मेल-जोल नहीं होना चाहिए और हमेशा मर्दों से दूरी बनी रहनी चाहिए। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने मस्जिदों में मर्दों की सबसे अच्छी क़तार पहली क़तार और औरतों की सबसे अच्छी क़तार आख़िरी क़तार को क़रार दिया। (हदीस : मुस्लिम) इसी तरह नबी (सल्ल॰) ने जब नमाज़ से वापसी में मर्दों और औरतों का मेल-जोल देखा तो औरतों को सम्बोधित करके कहा—

"एक तरफ़ हो जाओ। तुम्हें बीच में चलने का हक़ नहीं। तुम्हें रास्ते के किनारे पर चलना चाहिए।"

(हदीस : अबू-दाऊद)

(5) किसी ग़ैर-महरम से स्पर्श नहीं होना चाहिए। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा—

"तुममें से किसी के सिर में लोहे की छड़ घुसाना इससे बेहतर है कि तुम्हारे शरीर का किसी नामहरम के शरीर से स्पर्श हो।"

(6) ख़ूशबू का इस्तेमाल नहीं होना चाहिए—

"जो औरत ख़ुशबू लगाकर मर्दों के दरम्यान गुज़रती है वह ऐसी और ऐसी है अर्थात आवारा है।" (हदीस : तिरमिज़ी)

"जब कोई औरत मस्जिद में जाए तो ख़ूशबू लगाकर न जाए।" (हदीस : मुस्लिम)

(7) काम की दशा और काम का माहौल ऐसा नहीं होना चाहिए जिसमें उसकी औरत-सम्बन्धी कमज़ोरियों, ज़रूरतों और शरीअत के तक़ाज़ों का लिहाज़ न हो। यह सिद्धान्त काम के बँटवारे, जिसकी चर्चा पीछे हो चुकी है, से स्पष्ट है।

इन शर्तों के नतीजे में पूँजीवादी शक्तियों को इस शोषण का मौक़ा ही नहीं मिलता, जो वे करियर और औरतों की बराबरी के नाम पर कर रही हैं।

नग्नता और अश्लीलता से सम्बन्धित

अश्लीलता इतिहास के हर दौर में पूँजीवादियों का हथियार रही है। 'देह-व्यापार' (Sex Trade) एक बहुत मशहूर पेशा है। इसलिए इस्लाम ने अश्लीलता और देह-व्यापार के उन्मूलन के लिए विशेष क़दम उठाए हैं और

दूर तक जाकर उसके दरवाज़े बन्द किए हैं। इस्लाम ने स्वेच्छा या व्यापारिक आधार पर हर प्रकार की यौन-क्रिया को अवैध ठहराया है, जो शादी के दायरे से बाहर हो। अवैध यौन-क्रिया को एक दंडनीय अपराध क़रार दिया है और इसके लिए कठोर दण्ड का प्रावधान किया है, बल्कि इससे आगे बढ़कर इसके प्रेरक तत्त्वों तक को निषिद्ध कर दिया है।

न केवल व्यभिचार बल्कि गन्दे (अश्लील) चित्रों, गन्दे साहित्य, गन्दी बातचीत, यहाँ तक कि गन्दे विचारों (Fantasies) हर प्रकार की अश्लीलता इस्लाम में पूर्णतः निषिद्ध है–

> "निश्चय ही अल्लाह (हर एक के साथ) न्याय का और भलाई का आदेश देता है और नातेदारों को देते रहने का और अश्लीलता, बुरे कामों और सरकशी तथा अवज्ञा से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम ख़ूब याद रखो।" (क़ुरआन, 16:90)

> "कह दीजिए कि मेरे रब ने (तो) केवल अश्लील कर्म को हराम (निषिद्ध) किया है–जो उनमें से खुले हों उन्हें भी और जो छिपे हों उन्हें भी (सबको)–और गुनाह को और नाहक़ ज़्यादती को और इस बात को कि तुम उसका साझी ठहराओ, जिसका उसने कोई प्रमाण नहीं उतारा और इस बात को भी कि तुम उस (की ज़ात) पर ऐसी बातें कहो, जो तुम खुद भी नहीं जानते।" (क़ुरआन, 7:33)

> "कह दीजिए कि आओ मैं वे चीज़ें पढ़कर सुना दूँ जो तुम्हारे रब ने तुमपर हराम की हैं। ....अश्लील कामों के निकट न जाओ, (चाहे) वे प्रकट हों या छिपे हुए।" (क़ुरआन, 6:151)

अश्लीलता के दरवाज़े को इस्लाम कितनी सुदृढ़ता से बन्द करता है इस बात का अन्दाज़ा इस हदीस से होता है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने कहा–

> "आँख का व्यभिचार (ज़िना) देखना है, जीभ का व्यभिचार बोलना और दिल का व्यभिचार यह है कि वह कामना करता है। गुप्तांग (शर्मगाह) उसकी पूर्ति करता है या उसे नकार देता है।" (हदीस : बुख़ारी)

देखने की मनाही केवल वास्तविक अंगों तक सीमित नहीं है। चित्र, वीडियो, वेब कॉन्फ्रेंस इत्यादि भी इसमें शामिल हैं। इस्लाम तो यह भी पसन्द नहीं करता कि किसी औरत का विस्तृत हुलिया बयान किया जाए या उसकी छिपी हुई सुन्दरता का चित्रांकन किया जाए।

"कोई औरत किसी औरत का अपने पति के सामने इस तरह हुलिया बयान न करे, मानो वह उसे देख रहा हो।"

(हदीस : बुख़ारी)

इस्लाम हर उस व्यापार को हराम क़रार देता है जिसके द्वारा अश्लीलता का प्रचार-प्रसार होता हो। जो व्यक्ति व्यापार, विज्ञापन या किसी भी माध्यम से लोगों में अश्लीलता को फैलाए, क़ुरआन उसे कठोर यातना की चेतावनी देता है—

"निस्सन्देह जो लोग चाहते हैं कि मुसलमानों में अश्लीलता फैले, उनके लिए लिए दुनिया और आख़िरत (लोक-परलोक) में दुखद यातना है। और अल्लाह (ऐसे लोगों के बुरे विचारों को) जानता है तुम नहीं जानते।"

(क़ुरआन, 24:19)

पोर्नोग्राफ़ी (अश्लील साहित्य, फ़िल्में आदि) और इससे सम्बद्ध सारी चीज़ों के सारे व्यापार हराम (निषिद्ध) हैं। इनमें से किसी भी व्यापार का किसी भी तरह का सहयोग हराम है। ऐसी कम्पनी का शेयर ख़रीदना हराम है, जिसकी थोड़ी-सी पूँजी भी इस तरह के व्यापार में लगी हो, यहाँ तक कि अगर कोई व्यक्ति इंटरनेट कैफ़े चला रहा है तो उसके लिए यह अनिवार्य है कि वह हर सम्भव प्रयास करे कि उसके कैफ़े में कोई ग़लत साइट न देखे। अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) न कहा है—

"जब अल्लाह किसी चीज़ से मना करता है तो उसकी क़ीमत (लेने और देने) से भी मना करता है।"

(हदीस : मुस्नद अहमद, अबू-दाऊद)

इस तरह इस्लाम ने अश्लीलता के उद्योग-धंधों के ख़रीदार, उनमें पूँजी निवेश करनेवाले और उनका किसी भी तरह सहयोग करनेवाले सबके रास्ते बन्द कर दिए।

देह-व्यापार तो किसी इस्लामी समाज में एक मिनट नहीं चल सकता। क़ुरआन ने लौंडियों तक से यह काम कराना (जिसका उस ज़माने में शरीफ़ लोगों में भी चलन था) वर्जित ठहराया है—

"तुम अपनी लौंडियों को सांसारिक जीवन का लाभ प्राप्त करने के लिए व्यभिचार के लिए मजबूर न करो, जबकि वे पाकदामन (शादी की हिफ़ाज़त में) रहना चाहती हैं।"

(क़ुरआन, 24:33)

सौन्दर्य और मेकअप से सम्बन्धित

इस्लाम ने बड़ाई और श्रेष्ठता का सम्बन्ध धर्म और ईशपरायणता से जोड़ा है—

"निस्सन्देह अल्लाह के निकट तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है जो तुममें सबसे अधिक परहेज़गार हो। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जानवाला, ख़बर रखनेवाला है।"

(क़ुरआन, 49:13)

इस्लाम की दृष्टि में सुन्दरता कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिससे बड़ाई और श्रेष्ठता का सम्बन्ध हो। अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) ने कहा—

"औरत से शादी चार कारणों से की जाती है—धन-सम्पत्ति, वंश, सुन्दरता और धर्म। तो तुम उस औरत से शादी करो जो धर्म के मामले में सबसे बेहतर हो।"

(हदीस : बुख़ारी व मुस्लिम)

सुन्दरता अल्लाह की देन है और अल्लाह ने जो कुछ दिया है उसपर संतुष्ट रहना ज़रूरी है—

"जब तुम किसी ऐसे आदमी को देखो जिसे धन-सम्पत्ति और सुन्दरता के मामले में तुमसे अधिक प्रदान किया गया है तो उन लोगों को देखो जिन्हें यह सब तुमसे कम दिया गया है।" (हदीस : मुस्लिम)

इस्लाम ने औरतों को सजने-सँवरने की अनुमति दी है, लेकिन निम्नलिखित शर्तों के साथ—

(1) सँवरना सिर्फ़ पति के लिए हो : औरत का सँवरना सिर्फ़ उसके पति के लिए हो। किसी ग़ैर-महरम (ऐसे लोग जिसके सामने जाना इस्लाम ने वर्जित ठहराया है) या ग़ैर-महरमों के लिए सिंगार हराम है। सज-सँवरकर, अपने सौन्दर्य के प्रदर्शन को पवित्र क़ुरआन ने 'अज्ञानकाल का (मूर्खतापूर्ण) कर्म' कहा है और इसकी निन्दा की है—

"और विगत अज्ञानकाल की-सी सज-धज न दिखाती फिरना।"

(क़ुरआन, 33:33)

(2) सिंगार के दौरान अपने असली रूप या उम्र को छिपाने के लिए कृत्रिम साधनों को अपनाना उचित नहीं। अपनी प्राकृतिक बनावट और पहचान को बदलना भी नाजायज़ है—

"मैं (शैतान) उन्हें ज़रूर आदेश देता रहूँगा और वे निश्चय ही अल्लाह की संरचना में परिवर्तन करेंगे। और जो कोई

अल्लाह को छोड़कर शैतान को संरक्षक और मित्र बना ले तो वह सचमुच खुले घाटे में पड़ गया।"

(क़ुरआन, 4:119)

"अल्लाह तआला ने सुन्दरता के लिए गोदनेवालियों पर गुदवानेवालियों पर और चेहरे के बाल उखाड़नेवालियों पर और दाँतों के बीच दरार पैदा करनेवालियों पर और अल्लाह की संरचना को बदलनेवालियों पर लानत (अभिशाप) भेजी है।" (हदीस : बुख़ारी)

"अल्लाह ने बालों में नक़ली बाल लगानेवालियों पर और लगवानेवालियों पर लानत भेजी है।" (हदीस : बुख़ारी)

अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कृत्रिम बाल लगाने को धोखा क़रार दिया है और कहा है—

"जब उनकी औरतों ने यह करना शुरू किया तो बनी-इसराईल विनष्ट हो गए।" (हदीस : बुख़ारी)

(3) सिंगार के लिए ऐसे साधनों को भी अपनाना उचित नहीं, जिनसे शरीर और सेहत को नुक़सान पहुँचता हो—

"और अपने ही हाथों अपने आपको तबाही में न डालो।"

(क़ुरआन, 2:195)

"और ख़ुद अपनी जानों को हलाकत (मौत के मुँह) में न डालो।"

(क़ुरआन, 4:29)

इन सिद्धान्तों के आधार पर फ़ुक़हा (धर्मशास्त्रियों) ने केवल सुन्दरता के लिए प्लास्टिक सर्जरी कराने को हराम ठहराया है। इंटरनेशनल इस्लामी फ़िक़ह अकादमी ने 2007 ई॰ में मलेशिया में आयोजित विश्व सम्मेलन में इस विषय पर जो प्रस्ताव पारित किया है वह यह है—

"ख़ूबसूरती और सुन्दरता के लिए की जानेवाली ऐसी सर्जरी जो किसी चिकित्सकीय इलाज का हिस्सा न हो और जिससे केवल व्यक्ति की प्राकृतिक संरचना बदलना अभीष्ट हो, जाइज़ नहीं।"

इस्लाम के ये सिद्धान्त उन आधारों को ही ध्वस्त कर देते हैं, जिनपर हमारे समय की विनाशकारी सौन्दर्य-प्रसाधन इंडस्ट्री (Extreme Makeover Industry) क़ायम है और जिसके ज़रीए पूँजीपति औरतों के शोषण में लगा हुआ है।

उपभोक्तावाद

सादा जीवन उच्च विचार और चरित्र की उच्चता इस्लामी जीवन-दर्शन का मूल आधार है। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया—

"सादा जीवन-शैली में रहना (इनसान के) ईमान में से है।"

(हदीस : अबू-दाऊद)

रसूल (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया—

"सांसारिक भोग-विलास की सामग्री मेरे लिए नहीं है। मैं एक मुसाफ़िर की तरह हूँ, जो आराम के लिए थोड़ी देर पेड़ की छाया में ठहरता है, फिर चल पड़ता है।"

(हदीस : सुनन तिरमिज़ी)

पैग़म्बर (सल्ल०) का कथन है—

"एक बिस्तर मर्द के लिए, एक बीवी के लिए और एक मेहमान के लिए। चौथा बिस्तर शैतान का होगा।"

(हदीस : बुख़ारी, जाबिर रज़ि०)

इस हदीस से अभिप्राय यह है कि आवश्यकता से अधिक जमा करना फ़िज़ूलख़र्ची है। जो एक शैतानी काम है।

इस्लाम ने संसाधनों के इस्तेमाल में बीच का रास्ता अपनाने और आवश्यकता से अधिक संसाधनों को ग़रीबों में बाँटने का निर्देश दिया है—

"और खाओ और पियो और हद से अधिक ख़र्च न करो। निस्सन्देह, वह (अल्लाह) अपव्यय करनेवालों को पसन्द नहीं करता।"

(क़ुरआन, 7:31)

अगर अधिक संसाधन उपलब्ध हों तो क़ुरआन उन्हें फ़ुज़ूलख़र्ची के बजाय ज़रूरतमन्दों पर ख़र्च करने का आदेश देता है—

"और नातेदारों को उनका हक़ दो और मुहताज तथा मुसाफ़िर को भी (दो) और (अपना माल) फ़ुज़ूलख़र्ची से मत उड़ाओ। निश्चय ही, फ़ुज़ूलख़र्ची करनेवाले शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने रब का बड़ा ही कृतघ्न है।"

(क़ुरआन, 17:26, 27)

"और (ऐ पैग़म्बर) आपसे यह भी पूछते हैं कि कितना खर्च करें। कह दीजिए : जो ज़रूरत से अधिक है (ख़र्च कर दो)।" (क़ुरआन, 2:219)

अल्लाह के अन्तिम रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा—

"शैतानों के कुछ ऊँट होते हैं और कुछ मकान भी। शैतानों के ऊँटों को मैंने देखा है कि तुममें से एक आदमी कुछ बे सवारी के ऊँट लेकर निकलता है, जिन्हें उसने खिला-खिलाकर मोटा कर दिया है और उनमें से किसी ऊँट पर न खुद सवार

होता है और न अपने भाई को सवार करता है।"

(हदीस : अबू-दाऊद)

इन शिक्षाओं के होते हुए उन तनावों की कोई सम्भावना नहीं जो जीवन-स्तर और भोग-विलास की दौड़ के द्वारा पूँजीवादी समाज ने हमारे समय की औरतों में पैदा किया है। इस्लाम के एक सच्चे पैरो को तो अल्लाह की राह में ख़र्च करने और लोगों को फ़ायदा पहुँचाने की 'लत' होती है। वह कैसे फ़ुज़ूलख़र्ची और फ़ुज़ूल ख़रीदारी की लत में गिरफ्तार हो सकता है।

राज्य के दायित्त्व

आम जनता के बीच उपर्युक्त शिक्षाओं के सम्बन्ध में जागरूकता लाने के साथ-साथ सरकार को भी अपने निम्नलिखित दायित्त्वों को पूर्ण करना चाहिए।

1. औरतों के काम की दशा (Work Condition) और काम की जगहों की परिस्थिति को व्यवस्थित करने के लिए क़ानून बनना चाहिए और उन क़ानूनों को सभी कम्पनियों पर सख़्ती से लागू किया जाना चाहिए। काम की जगहों पर औरतों को प्राइवेसी मिलनी चाहिए और उनकी स्वाभाविक ज़रूरतों और कमज़ोरियों की पूरी रिआयत होनी चाहिए।

2. पोर्नोग्राफ़ी, अश्लील साहित्य, वेबसाइट्स इत्यादि पर सख़्त पाबन्दी लगनी चाहिए। ऐसी वेबसाइट्स को ब्लॉक करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर फ़ायरवाल्स का इस्तेमाल होना चाहिए। मीडिया को इस सम्बन्ध में व्यवस्थित करने के लिए सेंसर बोर्ड और प्रेस काउन्सिल जैसी संस्थाओं को और सरगर्म बनाया जाना चाहिए। इस प्रकार के उद्योग और इनके शेयरों की बिक्री, इनके लिए बैंकों द्वारा पूँजी उपलब्ध करवाने और इनके विज्ञापनों इत्यादि पर प्रतिबन्ध लगना चाहिए।

3. कॉस्मेटिक्स की निगरानी के लिए ड्रग्स अथॉरिटी की तरह की संस्था और क़ानून बनाने चाहिएँ और उन क़ानूनों को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आयातित उत्पादों पर भी सख़्ती से लागू किया जाना चाहिए। इसी तरह कॉस्मेटिक सर्जरी वग़ैरह को नियन्त्रित करने और उसके सम्बन्ध में क़ानून बनाने के लिए विशेषज्ञ डॉक्टरों और मनोरोग-विशेषज्ञों की कमेटी बननी चाहिए।

4. विज्ञापनों को नियंत्रित करने के लिए क़ानून और मेकानिज़्म बनना चाहिए। इसी तरह रियलिटी शोज़ पर भी पाबन्दी लगनी चाहिए।

• • •